

पुस्तकालय
संस्करण

16038

आटिका ‘वली’

शम्सुद्दीन ‘वली’



शम्सुद्दीन 'वली'

दिलदार की खबर पाने के लिए हरसं
बेताब रहने वाले उर्दू अदब के 'वाल्मीकि'
(आदिकवि) शम्सुद्दीन 'वली' औरंगा-
बाद (दक्न) के निवासी थे। उर्दू-दाँ
इनको 'उर्दू काव्य का बाबा आदम'
कहते हैं। इश्क-मज़ाजी इनकी शायरी
का प्रधान स्वर है। इश्क को ही इन्होंने
अपना मज़हब तथा सब कुछ माना है।
इनके काव्य में प्रेम-सौन्दर्य, वर्णन-सौन्दर्य
और ध्वनि-सौन्दर्य देखते ही बनता है।
श्री राजेश शर्मा ने बड़ी योग्यता से इनके
काव्य का सम्पादन किया है।



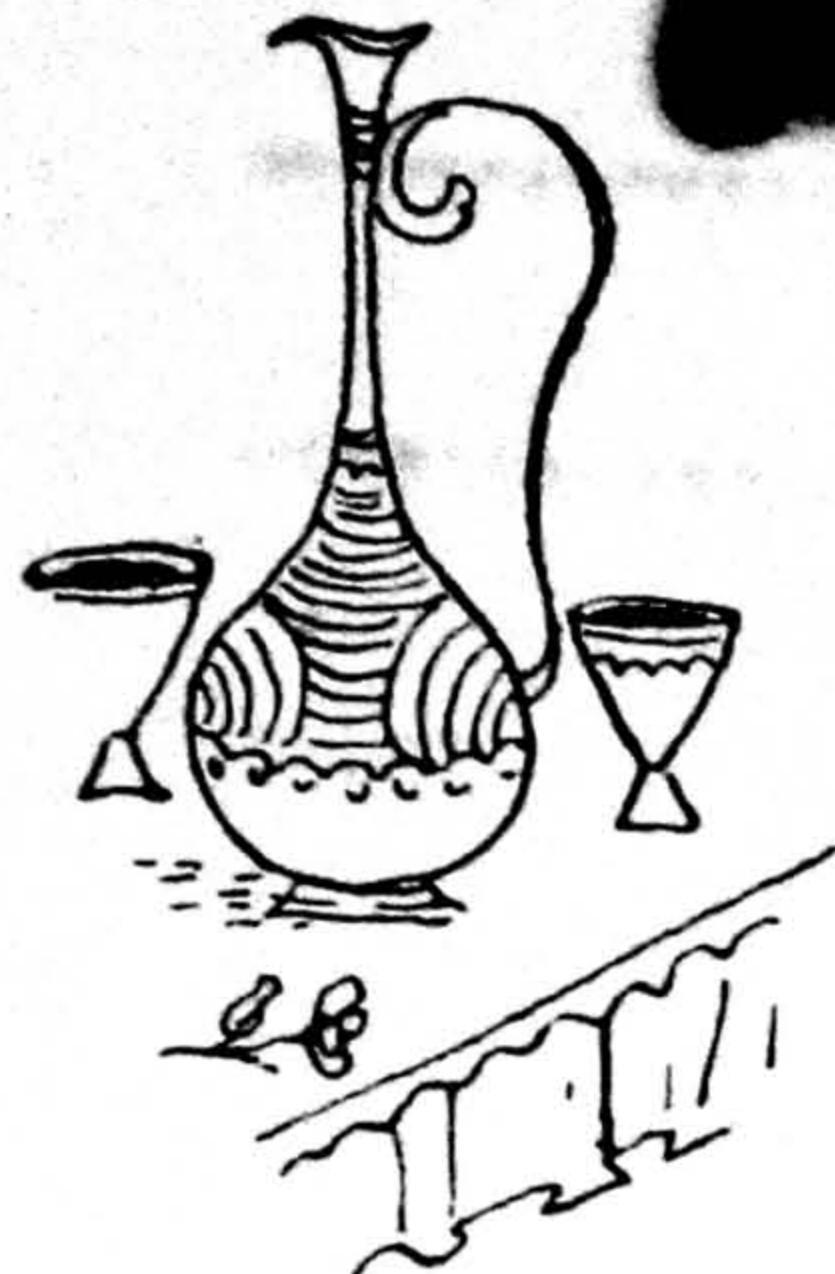


अ च ना
अभिनव
पुस्तक

वितरक

वर्मा ब्रदर्ज, २१ सेंट्रल मार्केट, पो. बा. ५३१, नई दिल्ली

Library Sri Pratap College
Srinagar.



आदि कवि
‘वली’

शम्सुद्दीन ‘वली’

Sh. Ghulam Mohamed & Sons
Booksellers & Publishers
MAISUMA BAZAR,
SRINAGAR.



अर्चना प्रकाशन, नई दिल्ली

Sri Prakash Galley
Srinagar

Admission Number.....
26038
Class No.....
Chart



अपना प्रकाशन

पटेल नगर, नई दिल्ली
प्रकाशक

मूल्य :

हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
क्वींस रोड, दिल्ली
मुद्रक

ADI KAVI 'WALI'

SHAMSUDDIN WALI

URDU POETRY

“वली” दकनी

बात रह जायगी कासिद वक्त रहने का नहीं
दिल तड़पता है शिताबी लाख बार दिलदार की
दिलदार की खबर पाने के लिये हरसूं बेताब रहने वाले उर्दू अदब
के वाल्मीकि (आदि कवि) शम्सुद्दान ‘वली’ औरंगाबाद (दकन) के
निवासी थे। उनका जन्म सन् १६६८ और मृत्यु सन् १७४४ में मानी
जाती है। इनके नाम के सम्बन्ध में अभी तक अन्वेषक और आलोचक
एकमत नहीं हैं। कइयों ने उनका नाम वली मुहम्मद भी लिखा है।

नाम के समान ही अभी तक उनकी वंश-परम्परा तथा शिक्षा-दीक्षा
आदि भी अनुसन्धान के विषय हैं। लेकिन यह निश्चित है कि यह अपने
समय के अच्छे विद्वान् थे और तत्कालीन प्रचलित भाषाओं के साहित्य
से भी पूर्ण परिचित थे। अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिये
यातायात के साधनों के अभाव के उस काल में भी इन्होंने दूर-दराज
स्थानों का भ्रमण किया।

ऐसा माना जाता है कि ‘वली’ ने दो बार दिल्ली की यात्रा की।
दिल्ली में जब यह तत्कालीन प्रसिद्ध साहित्यकार सहदुल्ला गुलशन से
मिले और उसे अपनी कविता सुनाई, वह बहुत प्रभावित हुए। लेकिन
सहदुल्ला गुलशन ने ‘वली’ को अपनी भाषा परिमार्जित करने की सलाह
दी। भाषा-परिमार्जन से हमारा अभिप्राय यह है कि अरबी-फारसी के
शब्दों को अपनी कविता में प्रयुक्त करने का मशविरा दिया। बस, तभी
से ‘वली’ की भाषा का रजूह तत्कालीन लोक और साहित्य भाषा से हट-

कर अरबी-फारसी की तरफ हुआ और ऐसा लगता है कि उसने कहीं-कहीं तो चुन-चुनकर अरबी-फारसी के शब्द अपनी कविता में रखे।

इश्क़-मज़ाजी 'वली' की शायरी का प्रधान स्वर है, जबकि उसमें कहीं-कहीं सूफ़ियत की भलक भी मिलती है, लेकिन उन्हें सूफ़ी हम कह नहीं सकते, क्योंकि इश्क़-मज़ाजी में तल्लीनता की बजाए वाह्य सौन्दर्य-वर्णन प्रधान है। किन्तु यह न समझना चाहिए कि उसमें गम्भीरता है ही नहीं। प्रेम की पीर तो बहुत ही अधिक है—

दुक 'वली' की तरफ निगह करो

सुबह सूँ मुन्तज्जर है दर्शन का

फिर 'वली' ने इश्क़ को ही अपना मज़हब तथा सब कुछ माना है। इसलिये अपने प्रिय की सूरत देखना वह अपना ऐन-फर्ज़ तथा हक्क समझता है—

मज़हबे-इश्क़ में तेरी सूरत

देखना हम कूँ फर्ज़े-ऐन हुआ

केवल इतना ही नहीं, उस इश्क़ की इन्तहा के कारण जीवन मुफ़्लसी का मरकज़ बनके रह गया है। तभी तो कवि का मन कह उठा—

मुफ़्लसी बेकसी की फौजों ने

शहर-दिल कूँ किया है बीराँ आ

ऊपर हम कह चुके हैं कि 'वली' में सूफ़ियत की भलक भी है। वह प्रिय तो पिन्हा (अगोचर) है। उसका अनुभव हम इश्क़ की पवित्रता से कर सकते हैं। क्योंकि इश्क़ स्वयं पवित्रता का दूसरा नाम है और फिर पता नहीं वो (प्रिय) कहाँ रहता है। 'वली' स्वयं उससे पूछता है—

तिरी तारीफ़ करते हैं मुलामिक

सुना तेरी कहाँ हद्दे-बशर है!

'हद्दे-बशर' को खोजने की 'बाट में उश्शाक़ कई फ़ानी हुए !' तो

'वली' का विश्वास 'दुनियांए-फानी' की अस्थिरता पर भी है।

संक्षेप में यों कहा जा सकता है कि 'वली' के काव्य में प्रेम-सौन्दर्य, वर्णन-सौन्दर्य, ध्वनि-सौन्दर्य और इन सबका वास्तविक रूप वर्तमान है। मज़हब के बारे में भी उनका ज्ञान सजग है। पुरुष-सौन्दर्य का चित्रण, प्राकृतिक उपमाएँ और (परिभाषिक रूप से) नख-शिख-वर्णन 'वली' के काव्य की अपनी विशेषता है।

वली की भाषा—वास्तव में 'वली' ने तत्कालीन लोक-भाषा में ही अपने काव्य की रचना की है। दिल्ली से प्रभावित होकर उनमें कुछ कठिनता अवश्य आ गई थी और दरबारी रविश के कारण कुछ अरबी-फारसियत का रंग भी आ गया था, फिर भी उनकी भाषा को तत्कालीन 'लोक' से अलग नहीं कहा जा सकता। उनमें ब्रज, अवधि और संस्कृत भाषाओं की भी विशेष पुट है। कूँ, सूँ, रयन (रात), निस-दिन, ज्यूँ, परत, पीत (प्रीत), पीव, जीव, मोहन, सजन आदि अनेकों शब्द इसके उदाहरण हैं। इन शब्दों में जो भाषाई-पुट है, उसे ध्यान में रखने पर ही 'वली' को समझा जा सकता है।

हमने 'वली' के लिये 'आदि कवि' शब्द का प्रयोग किया है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उससे पहले उर्दू (लिपि) में कविता थी ही नहीं। थी अवश्य, किन्तु उर्दू कविता को सही रूप में प्रयुक्त करने के कारण ही उर्दू-दाँ 'वली' को 'उर्दू-काव्य का बाबा आदम' कहते हैं। 'वली' से उर्दू भाषा का अलग मयार बनने लगा। नहीं तो गोलकुण्डा दरबार में उर्दू कविता का केन्द्र पहले भी था। किन्तु उनका रजूह हिन्दी या तत्कालीन साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा आदि की ओर अधिक था। 'वली' अरबी-फारसी की ओर झुकता गया और प्रसिद्ध कवि मीर दर्द तक यह झुकाव ही रहा, जबकि उसके बाद उर्दू का एक अलग रूप स्थिर हो गया। 'वली' के बाद के 'हातिम' आदि कवियों में भी 'वली' का-सा

ही रंग है।

कुछ भी हो, 'वली' की काव्य-प्रतिभा की महानता से प्रेरित होकर ही यह उसके काव्य का कुछ चुना हुआ भाग पाठकों के हाथ में दिया जा रहा है। हमने 'वली' के सभी रंग पेश करने का प्रयास किया है। उसके अपने शब्दों में—

'वली' जिनने सुना मेरे सुखन कूँ
जबाँ पर उसकी फ़िकरे-आफ़रों हैं।

—राजेश

ऐ रश्के-महताब^१ तू दिल के सहन में आ
फुरसत नहीं है दिन को अगर तू रयन^२ में आ
ऐ गुल अज्जारे-गुंचा दहन^३ टुक चमन में आ
गुल सर पे रख के शम आ नमन^४ अंजुमन^५ में आ
ज्यों तिफ्ले-अश्क^६ भाग नको मुझ नज़र सती
ऐ नूरे-चश्म, नूरे-नमत^७ ! मुझ नयन में आ
कब लग अपसके गुंचए-मुख को रखेगा बन्द
ऐ नौबहारे - बागे - मुहब्बत सुखन में आ
ता - गुल के रुए - रंग उड़े ओस के नमन
ऐ आफताबे-हुस्न टुक यक तूं चमन में आ
तुझ इश्क सों किया है 'वली' दिल कों बैते-ग्राम^८
सुरअ़त^९ सती ए मायन ए-बेगाना ! मन में आ



वो नाज़नीं अदाएँ एजाज़^{१०} है सरापा^{११}
खूबी में गुलरुखाँ सों मुमताज़ है सरापा
ऐ शोख, तुझ नयन में देखा निगाह कर-कर
आशिक के मारने का अन्दाज़ है सरापा
जग के अदा शनासाँ है जिनकी फ़िक्रे-आली
तुझ क़द कों देख बोले यो नाज़ है सरापा
क्यों हो सकें जगत के दिलबर तेरे बराबर
तू हुस्न होर अदा में एजाज़ है सरापा

- | | | | | |
|------------------------------|--------------------|--------------------|------------|-----------|
| १. चाँद भी जिससे ईर्ष्या करे | २. रात | ३. फूल की कली जैसा | | |
| मुँह | ४. समान | ५. सभा, दुनिया | ६. अश्रुकण | ७. आँख की |
| | ८. समान | ९. सभा, दुनिया | १०. जल्दी | ११. जादू |
| | ११. सर से पैर तक । | १२. ग्राम का गीत | १३. जल्दी | १४. जादू |

गाहे ऐ इस्वी-दम^१ यक बात लुत्फ़ सों कर
जाँ बख्श मुझकूँ तेरा आवाज़ है सरापा
मुझ पर 'वली' हमेशा दिलदार मेहरबाँ है
हरचन्द हस्बे - ज़ाहिर तन्नाज़^२ है सरापा



किताब अल-हुस्न यह मुख सफ़ा तेरा सफ़ा दिस्ता
तिरे अब्रू के दो मिस्त्रा सों इसका इब्तदा दिस्ता
तिरा मुख हुस्न का दरिया-ओ मौजाँ^३ चीने-पेशानी
ऊपर अब्रू की कश्ती के यो तिल ज्यों नाखुदा^४ दिस्ता
तिरे लब हैं ब-रंगे-हौजे - कोसर मखजने - खूबी^५
ये खाले-अम्बरी^६ तिस पर हिलाला-सा^७ खड़ा दिस्ता
इशाराते - आँखियाँ सूँ गर्चे हूँ बीमार मैं लेकिन
तेरे लब ऐ मसीहे-वक्त^८, क़ानूने-शफ़ा दिस्ता
हुआ जो गौहरे-दिल अर्के-बहरे-हुस्न है नायाब
ज़बस^९ दरियाए-हुस्ने दिलबराँ बे-इन्तहा दिस्ता
बयाँ उसकी नज़ाकत होर लताफ़त^{१०} का लिखूँ ताकि
सरापा महश्रे - खूबी मने^{११} नाज़ो - अदा दिस्ता
यो खत का हाशिया गर्चे 'वली' है मुख्तसर लेकिन
मत्तवल^{१२} के मुआनी^{१३} का तमामी मुह्या दिस्ता

१. ईसा जैसी साँस २. मग़रूर ३. लहरें ४. नाविक ५. सौन्दर्य
का खजाना ६. तिल का काला निशान ७. ईद का चाँद ८. समय
के मसीहा, मालिक ९. हरचन्द १०. सुन्दरता ११. अत्यधिक
सुन्दरता में १२. अर्थ की लम्बाई, गहराई १३. अर्थ।

मत्त आतिशे - ग़फ़लत सों मेरे दिल कूँ जला जा
 मुश्ताक़^१ दरस का हूँ टुक यक दरस दिखा जा
 बेरहम न हो, गुस्सा न कर, बात मेरी सुन
 डरता नहीं, यक बात की सौ बात सुना जा
 जलता हूँ मैं मुद्दत सती ऐ हुस्न के दरिया
 टुक मुख कूँ दिखा, आग मिरे दिल की बुझा जा
 ख्वाहिश है मुझे दरद के पढ़ने की हमेशा
 यक बार किसू तरज्ज सों टुक इस्म^२ बता जा
 जब उसकी तरफ जाता हूँ कर क़स्दे - तमाशा
 कहता है मुझे खोफे - रकीबाँ^३ सूँ कि जा - जा
 मैं बोसा^४ किया लब सों परी-रु^५ के तलब^६ ज्यों
 गुस्से सती बोलया कि चला जा बे चला जा
 मुद्दत सों 'वली' झाँजे में है हाथ सों दिल के
 तू भी ऐ जिगर आह की नौबत^७ कूँ बजा जा



गर तू चाहता है कि देखूँ रंगे वसहत मशरबी^८
 सिदक-नीयत^९ सूँ शताबी दामने सहरा पकड़



ख्वाबे-खुश आती नहीं शब कूँ तुझ बिन ऐ सनम
 जब से देखे हैं तिरी तस्वीर याराँ अल्खयास^{१०}

-
- | | | | | |
|-----------|---------|-------------------|-------------|------------|
| १. इच्छुक | २. नाम | ३. दुश्मन | ४. चुम्बन | ५. सुन्दरी |
| ६. माँगा | ७. वीणा | ८. पीने की प्याली | ९. फराखदिली | १०. अच्छी |
| नियत | दुहाई। | | | |

तन पीस सुर्मा करके बसा तुझ नयन में जा
हो बूए - गुल^१ बसा हूँ तिरे पीरे - मन^२ में जा
हर तार में जुल्फ़ के तिरी सैर जा करूँ
बादे - सबा^३ का साथ लिया हूँ चमन में जा
आतिश^४ ने तुझ जमाल^५ के जल्वे कूँ देख कर
कीती है ज़िन्दगी कूँ पस की कफ़न में जा
जग में जो एतबार न पाया तिरे नज़ीक
होकर खिजल^६ सूरज ने लिया है गगन में जा
रखा है तार - तार किया उसके शौक में
हरदम ख्याल बान्ध के उसकी नयन में जा
जो देखते रकीब असी हाल कूँ तमाम
दिन-रैन जलते रहते वो दोज़ख - अग्न^७ में जा
मानिन्द खूँ [अक्कीकूँ- 'वली' गुल के बह चले
शोहरत मिरे अंभूँ की पड़ी जब यमन में जा



मत गुस्से को शौले सूँ जलते कूँ जलाती जा
टुक मेहर के पानी सूँ तू आग बुझाती जा
तुझ चाल की कीमत सों दिल नहिं है मिरा वाकिफ
ऐ मान भरी चंचल, टुक भाव बताती जा
इस रात अँधेरी में मत भूल पड़ूँ तिस सों
टुक पाँव के भाँझे की झँकार सुनाती जा

१. फूल की सुगन्ध २. मन की पीड़ा ३. ठण्डी हवा ४. अग्नि
५. सौन्दर्य ६. शर्मिन्दा ७. नरक की आग ८. लाल जवाहर
९. आँसू।

मुझ दिल के कबूतर कूँ पकड़ा है तिरी लट ने
 यह काम धरम का है, टुक इसको छुड़ाती जा
 तुझ मुख की परसतश^१ में गई उम्र मिरी सारी
 ऐ बत की बचनहारी, टुक उसकूँ पुजाती जा
 तुझ इश्क में जल-जल कर सब तनकूँ किया काजल
 यह रोशनी-अपज्ञा^२ है अँखियाँ कूँ लगाती जा
 तुझ नेह में दिल जलकर जोगी की लिया सूरत
 यक बारे इसे मोहन^३ छाती सूँ लगाती जा
 तुझ घर की तरफ सुन्दर आता है 'वली' दायम^४
 मुश्ताक दरस का है टुक दरस दिखाती जा



दिलरुबा आया नज़र में आज मेरी खुश अदा
 खुश अदा ऐसा नहीं देखा हूँ दूजा दिलरुबा
 बेवफा गर तुझको बोलूँ, है बजा ऐ नाज़नीं
 नाज़नीं आलम मने होते हैं अक्सर बेवफा
 कम-नुमाँ है नौजवाँ मेरा बरंगे माहे-नौ^५
 माहे-नौ होता है अक्सर ऐ अज़ीज़ाँ कम-नुमाँ
 मुद्दए-आश्काँ हर आन है दीदारे-यार
 यार के दीदार बिन दूजा अबस^६ है मुद्दआ^७
 कीमया^८ आशिक^९ के हक में है निगाहे-गुलरुखाँ^{१०}
 गुलरुखाँ सों जग में पाया हूँ 'वली' यह कीमया

१. पूजा, खोजना २. प्रकाशदायक ३. प्रियतम ४. हमेशा,
 अक्सर ५. नया चाँद ६. वेकार ७. चाह, उद्देश्य ८. फरेब
 ९. फूल-सी कोमल नज़रें।

दिल कूँ लगती है दिलरुबा की अदा
जी में बस्ती है खुश अदा की अदा
गच्छ सब खूबरु^१ हैं खूब वले
कत्ल करती हैं मीरज़ा की अदा
हफ्फे-बेजा बजा है गर बोलूँ
दुश्मने - होश है पिया की अदा
नक्शे - दीवार क्यों न होवे आशिक़
हैरत - आफ़ज़ा^२ है बेवफ़ा की अदा
गुल हुए अँके - आब^३ शबनम में
देख उस साहिबे - हया^४ की अदा
अश्क - रंगी^५ गँक हैं निस - दिन
जिन ने देखा है तुझ हिना^६ की अदा
ऐ 'वली' दर्द - सर की दारु है
मुझ कूँ उस सन्दली - क़बा^७ की अदा



हुआ है सैर का मुश्ताक बेताबी सों मन मेरा
चमन में आज आया है मगर गुल-पेरहन^८ मेरा
मिरे दिल की तजल्ली^९ क्यों रहे पोशीदा मजलिस में
जहीफ़ी सों हुआ है पर्दा - ए - फ़ानूस^{१०} तन मेरा
नहीं है शौक मुझकूँ बाग की गुलग़शत^{११} का हर्गिज़
हुआ है जल्वागर दागँ सों सीने का चमन मेरा

१. सुन्दर २. आश्चर्यवर्द्धक ३. पानी-पानी होना ४. शर्मिले
५. मेंहदी ६. चन्दन के बूरे जैसी ठण्डी, पतली कमर वाली ७. फल
से भी बढ़िया पौशाक़ वाला; प्रिय ८. रोशनी ९. कमज़ोर १०. सैर।

मुवा हूँ तुझ जुदाई के दुखाँ, ऐ नूरे - ऐने - दिल
 बरझे-मरदमक^१ अँखियाँ का पर्दा है कफ़न मेरा
 लगे फीकी नज़र में ऐ 'वली' दूकाने - हलवाई
 अगर हो जल्वागर बाज़ार में शीरीं - बचन^२ मेरा



देखा है जिन ने तेरे रुखसार^३ का तमाशा
 नहिं देखता सूरज की भलकार का तमाशा
 ऐ रश्के-बागे-जन्मत^४, जब सों जुदा हुआ तू
 दोजख है मुझकूं तब सों गुलज़ार का तमाशा
 बेक़स्द^५ मुझ जबाँ पर आता है लप़ज़े-तमकीं^६
 देखा हूँ जब से तेरी रफ़तार का तमाशा
 हिन्दू ने साफ़ दिल से डाला गले में रिश्ता
 देखा जो तुझ सनम के जुन्नार^७ का तमाशा
 नगिस नमन रही नहिं पल मारने की ताक़त
 आ देख, उस अँखियाँ के बीमार का तमाशा
 उस मुख का रंग उड़कर कौसे-क़ज़ह^८ कूं पहुँचा
 देखा जो तुझ भवाँ की तलवार का तमाशा
 तब सों 'वली' का मतलब जा बीच में पड़ा है
 देखा है जब सों तेरी दस्तार^९ का तमाशा

१. पुतलियाँ २. मधुर वचन ३. कपोल ४. स्वर्ग के बगीचे
 से भी बढ़कर ५. अनिच्छा ६. कद्रदानी ७. जनेऊ ८. इन्द्र-
 धनुष ९. पगड़ी।

मूसा अगर जो देखे तुझ नूर का तमाशा
 उस कूँ पहाड़ होवे फिर तूर का तमाशा
 ऐ रश्के-बागे-जन्मत तुझ पर नज़र किये सूँ
 रिज़वाँ^१ को होवे दोज़ख फिर हूर का तमाशा
 रोज़े-सियाह^२ उसके मू-मू^३ सूँ जल्वागर है
 तुझ जुल्फ़ में जो देखा देज़ूर^४ का तमाशा
 कसरत^५ के फूल बन में जाते नहीं है आरिफ़^६
 बस है मोहदाँ^७ को मन्सूर का तमाशा
 है जिस सूँ यादगारी वो जल्वागर है दायम^८
 तू चीं में देख जाकर फ़ख़फ़ूर^९ का तमाशा
 वो सर-बुलन्दे-आलम अज़बस है मुझ नज़र में
 ज्यों आस्माँ अयाँ है मुझ दूर का तमाशा
 तुझ इश्क़ में 'वली' के अंभू उबल चले हैं
 ऐ बहरे-हुस्न^{१०} आ देख इस पूर का तमाशा



रुह-बख्शी है काम तुझ लब का
 दमे - ईसा है नाम तुझ लब का
 हुस्न के खिज़र ने किया लबरेज़
 आबे-हैवाँ^{११} सूँ जाम तुझ लब का
 मन्तक़-ओ-हिक्मत-ओ-मुआनी^{१२} पर
 मुश्तमिल^{१३} है क़लाम तुझ लब का

१. स्वर्ग का दरबान २. काली रात ३. रोम-रोम ४. अँधेरी
 रात ५. भीड़भाड़, अधिक ६. ले जाने वाले ७. खुदा को जानने
 वाला ८. हमेशा ९. गौरव १०. सौन्दर्य-सागर ११. अमृत
 १२. हिक्मत तथा इल्म के जानकार, विद्वान् १३. छा जाने वाला।

जन्नते-हुस्न में किया हक्क ने
 हौजे-कोसर^१ मकाम तुझ लब का
 रगे-याकूत^२ के क़लम सूँ लिखीं
 खत परस्ताँ पयाम तुझ लब का
 सब्जा-ओ-बर्ग-ओ-लाला^३ रखते हैं
 शौके-दिल में दवाम^४ तुझ लब का
 ग़र्के-शकर^५ हुए हैं कामों-ज़बाँ
 जब लिया हूँ मैं नाम तुझ लब का
 मशले-याकूत^६ खत में है शार्गिद
 साग़रे-मै मदाम तुझ लब के
 है 'वली' की ज़बाँ कूँ लज्जत बख्श
 ज़िक्र हर सुबह-ओ-शाम तुझ लब का



मुझ घट में ऐ न-घर-घट है शौक तुझ घुँघट का
 देखे सूँ लुट गया दिल तेरी जुलफ़ का लटका
 कर याद तुझ कपट कूँ पड़ते हैं अरशक टप-टप
 मुख बात बोलता हूँ शिकवा तेरी कपट का
 तुझ नयन के देखन कूँ दिल थाट कर चला था
 ग़मज़े^७ के देख थट कूँ नाचार हो के थटका^८
 तुझ खत^९ के बिन तवज्जह खुलना है उसका मुश्किल
 हल्के में तुझ जुलफ़ के जो जीव जा के अटका

१. स्वर्ग-नदी का हौज २. जवाहर के टुकड़े ३. हरियाली, बिजली
 तथा लाल फूल ४. हमेशा ५. मिठास में डूब गये ६. लाल जवाहिर के
 समान ७. इशारा ८. ठिठक गया ९. तिल का निशान।

हर्गिज़ 'वली' किसी कन शाकी^१ तेरा न होता
गर तुझ में ऐ हटीले होता न तौर हट का



नहीं शौक उसके दिल में कधीं लाला ज्ञार का
मुश्ताक^२ है जो पीव के रुखे-आबदार का
लगता है मुझ कूँ पंजा खुशीदि-राशादार^३
देखा हूँ जब सूँ दस्ते-निगारीं-निगार का^४
हर ज़र्रा उसकी चश्म में लबरेज़े-नूर है
देखा है जिनने हुस्ने-तजल्ली^५ बहार का
ताक़त नहीं किसी कूँ कि यह हर्फ़ सुन सके
अहवाल गर कहूँ मैं दिले-बेक़रार का
आवे 'वली' हमारी तरफ़ तेझे-नाज़ ले
उस शोख़ कूँ ख़याल अगर है शिकार का



जग मने दूजा नहीं है ख़ूबरू तुझ सार का
चाँद कूँ है आस्माँ पर रश्क तुझ रुख़सार का
जब से तेरी ज़ुल्फ़ कूँ देखा है ज़ाहिद^६, ऐ सनम
तर्क कर सबह^७ कूँ है मुश्ताक तुझ ज़ुन्नार का
दिल को मेरे तब सेतीं हासिल हुआ है पेचो-ताब
जब सूँ देखा पेच तेरी लटपटी दस्तार^८ का

१. चाहक, शौकीन २. इच्छुक ३. किरणों से युक्त सूर्य ४. बनाने
या लिखने वाले का हाथ, यहाँ पिय का सुन्दर हाथ ५. रोशनी ६. धार्मिक
७. तस्बीह ८. पगड़ी।

तुझ गली की खाके-राह^१ जब सूँ हुआ हूँ ऐ पिया
 तब सूँ तेरा नक्शे-पा^२ तकिया^३ है मुझ बीमार का
 बुलबुलाँ गर यक नज़र देखें तिरे मुख का चमन
 फिर न देखें ज़िन्दगी में मुख कधीं गुलज़ार का
 बहरे-बेपायाँ^४ ने मुझ अँझवाँ सती पाया है फ़ैज़^५
 अब्रनीसाँ^६ अब्द है मुझ चश्मे-गोहरबार^७ का
 टुक अपस का मुख दिखा ऐ राहते-जानो-जिगर
 है 'वली' मुद्दत सती मुश्ताक तुझ दीदार का



देखना हर सुबह तुझ रुख़सार का
 है मुताला मुतल-ए-अनवार^८ का
 बुलबुलो परवाना करना दिल के तईं
 काम है तुझ चेहरा-ए-गुलनार का
 सुबह तेरा दरस पाया था सनम
 शौके-दिल मुहताज है तक़रार का
 माह^९ के सीने उपर ऐ शमआ-रूह
 दाग है तुझ हुस्न की भलकार है
 दिल कूँ देता है हमारे पेचो-ताब
 पेच तेरे तुर्रा-ए-तरार^{१०} का

१. पथ की धूल २. पैरों का निशान ३. पवित्र स्थान ४. अतल
 सागर ५. फ़ायदा ६. बादलों से युक्त ७. आँख के मोती, आँसू ८. प्रकाश
 को अध्ययन करना ९. चाँद १०. तेज-तरार पगड़ी का तुर्रा, ऊँचा
 तुर्रा।

जो सुनिया तेरे दहन सूँ यक वचन
 भेद पाया नुस्ख-ए-इसरार^१ का
 चाहता है इस जहाँ में गर बहिश्त
 जा तमाशा देख उस रुख्सार का
 आरसी के हाथ सूँ डरता है खत
 चोर कूँ है खौफ चौकीदार का
 सरकशी आतिश मज्जाजी^२ है सबब
 नासहों^३ कूँ गर्मि-ए-बाज़ार का
 ऐ 'वली' क्यों सुन के नासह की बात
 जो दीवाना है परी-रुख्सार^४ का



याद करना हर घड़ी उस यार का
 है वज़ीफ़ा मुझ दिले-बीमार का
 आरजू-ए चश्म-ए-कोसर^५ नहीं
 तिश्ना-लब^६ हूँ शर्वते-दीदार का
 आक्रबत^७ क्या होएगा, मालूम नहीं
 दिल हुआ है मुब्तिला दिलदार का
 क्या कहे तारीफ़ दिल है बेनज़ीर^८
 हर्फ़-हर्फ़ उस मखज़ने-इसरार^९ का
 गर हुआ है तालबे-आज़ादगी
 बन्द मत हो सबह-ओ-जुन्नार का

१. बात का रहस्य २. गर्म मिज्जाज ३. धर्मोपदेशक ४. गाल ५. स्वर्ग
 का चश्मा ६. प्यासा ७. अन्त ८. लाजवाब ९. सौन्दर्य का गुप्त खजाना ।

मसनदे-गुल^१ मंजिले-शबनम हुई
 देख रुतबा दीदाए-बेदार^२ का
 ऐ 'वली' होना सरीजन^३ पर निसार
 मुहुर्मा है चश्मे - गौहरबार का



अर्याँ है हर तरफ आलम में हुस्ने-बेहिजाब^४ उसका
 बगैर अज्ञ दीद-ए-हैराँ नहीं जग में नक्काब उसका
 हुआ है मुझ पे शमआ बज़म यक रंगीं सूँ यो रोशन
 कि हर ज़रूर-ऊपर ताबाँ है दायम आफताब उसका
 करे उश्शाक कूँ ज्यूँ सूरते - दीवारे - हैरत सूँ
 अगर पदे सूँ वा^५ होवे जमाले-बेहिजाब^६ उसका
 सजन ने यक नज़र देखा निगहे-मस्त सूँ जिसकूँ
 ख़राबाते-दो आलम^७ में सदा है वह ख़राब उसका
 मेरा दिल पाक है अज़बस 'वली' रंगे-कदूरत^८ सों
 हुआ जूँ जौहरे-आइना मख़फ़ी^९ पेजो-ताब उसका



तुझ इश्क सूँ उश्शाक का मन आग हुआ
 खुशीद-नमन तमाम तन आग हुआ
 हर तरुत-ए-लाले पे लिखे लाली सूँ
 तुझ रंग की गैरत सूँ चमन आग हुआ

१. फूलकी मसनद २. खुली आँखें ३. साजन ४. बे-पर्दा ५. प्रगट
 ६. प्रगट सौन्दर्य ७. दोनों जहान ८. कुदरत का रंग ९. गुप्त,
 पोशीदा।

तेरी जुल्फँ का हर तारे-सियाह है काल आशिक़ का
हुआ है उसके जल्वे सूँ परेशाँ हाल आशिक़ का
नहीं दरकार ता-बोले बयाँ अपनी जबाँ सेती
अयाँ है अश्क के तूमार^१ सूँ अहवाल आशिक़ का
न जावे मुल्के-बेताबी सूँ यक लहमा कधी बाहिर
ज़मीं में बेकरारी की गड़या है नाल^२ आशिक़ का
तिरा दिल ऐ परी-पैकर^३ अगर शोहरत का तालिब नहीं
तो अपना मुख दिखाकर दूर कर जंजाल आशिक़ का
अगर जावे पिया के मुख तरफ बरूत-आज़माई^४ कूँ
करे पिव का तग़ाफुल^५ उठ के इस्तक्कबाल आशिक़ का
पिया के अबरु-ए-कज^६ ने किया है दिल कूँ सरकरदाँ
करो मालूम इस चोगानो-गो^७ सूँ हाल आशिक़ का
जहाँ जाता हूँ वहाँ आता है साये के नमन पीछे
तिरे बिरह ने ऐ ज़ालिम लिया दम्बाल^८ आशिक़ का
न होवे चर्ख^९ की गदिश सूँ उसके हाल में गदिश
बजा है कुत्ब^{१०} के मानिन्द इस्तक्कबाल आशिक़ का
कधी दामे-मुहब्बत सूँ खलासी उसकूँ हर्गिज़ नहिं
तेरी अँखियाँ के डोरे सूँ बँधा है जाल आशिक़ का
न पूछो इश्क में जोशो-खरोशो-दिल की माहीयत^{११}
बरंगे-अब्रे-दरिया^{१२} बार है रूमाल आशिक़ का

१. लम्बाई, अधिकता २. नली, यहाँ शरीर ३. सुन्दरी

४. भाग्य-परीक्षा ५. कल्पना ६. टेढ़ी भँवें ७. पोलो जैसा पुराना
खेल, चौगान के खिलाड़ी ८. पोंछ ९. आकाश, भाग्य १०. कुत्ब
या ध्रुव तारा, अटल ११. वास्तविकता १२. बादल तथा दरिया।

'वली' यो मिस्त्रा-ए-रंगीं हुआ है दर्द जानो-दिल
फ़िदा है इश्क़ में दिलबर के जानो-माल आशिक़ का



हुआ है दिल मिरा मुश्ताक़ तुझ चश्मे-शराबी^१ का
खुराबाती^२ उपर आया है शायद दिन खराबी का
किया मदहोश मुझ दिल को उन्नींदे-नयन-साक़ी ने
अजब रखता है कैफीयत ज़माना नीम रुवाबी^३ का
खते - शबरङ्ग^४ रखता है अ़दावत हुस्ने - ख़बाँ^५ से
कि ज्यों खफ़ाश^६ है दुश्मन शुआए-आफ़ताबी^७ का
न जाऊँ सहने-गुलशन में कि खुश आता नहीं मुझको
बगैर-अज़-माहे-रू^८ हर्गिज़ तमाशा माहेताबी^९ का
न पूछो अब हुआ है कमसुखन वो दिलबरे-रंगीं
लबे - तस्वीर पर है रंगे - दायम लाजवाबी का
परी रुख^{१०} कूँ उठाना नींद सूँ बरजा नहीं आशिक़
अ़जब कुछ लुत्फ़ रखता है ज़माना नीम रुवाबी का
न जानूँ किस परी - रु सूँ हुआ है जा के हमज़ानू^{११}
कि आइने ने पाया है लक़ब^{१२} हैरते-मुआबी^{१३} का
'वली' सूँ बेहिसाबी बात करना बेहिसाबी है
नहीं वो आशना ऐ यार हर्गिज़ बेहिसाबी का

१. मस्त आँख २. भक्खी ३. अधजगी दशा ४. काला तिल
५. सुन्दरों को सौन्दर्य ६. चमगीदड़ ७. सूर्य की किरण ८. चाँद-
सी सुन्दर ९. चाँदनी १०. सुन्दरी ११. साथ बैठने वाला १२.
नाम १३. आश्चर्य का ठिकाना।

टुक 'वली' की तरफ निगाह करो
सुबह सूँ मुन्तज़र है दर्शन का



शुग़ल बेहतर है इश्क़बाज़ी का
क्या हक्कीकी^१ क्या मजाज़ी^२ का
हर ज़बाँ पर है मशले-शाना^३ मदाम
ज़िक्र तुझ ज़ुल्फ़ की दराज़ी^४ का
होश के हाथ में अ़ना न रही
जब सूँ देखा सवार ताज़ी का
तैं दिखा कर अपस के मुख की किताब
इलम खोया है दिल सूँ काज़ी का
आज तेरी भवाँ ने मस्जिद में
होश खोया है हर नमाज़ी का
गर नहीं राज़े-इश्क़ सूँ आगाह
फ़ख़ बेजा है फ़ख़र-राज़ी का
ऐ 'वली' सर्व-कद^५ कूँ देखूँगा
वक्त आया है सरफ़राज़ी^६ का



तू सर सूँ क़दम तलक भलक में
गोया है क़सीदा^७ अनवरी^८ का

१. वास्तविक २. अवास्तविक ३. कन्धा ४. लम्बाई ५. सर्व के
पेड़ के समान लम्बा, प्रिय ६. सिर-अर्पण ७. विरहगीत ८. प्रकाश की
किरण।

अबस^१ ग्राफिल हुआ है गा फ़िक्र कर पिऊ के पाने का सफ़ा कर आरसी दिल की सिकन्दर हो ज़माने का चिरागे-दिल अगर गुल^२ है तो कर ज्यों गुल^३, उसे रोशन कि यह तौहफ़ा है सालक^४ कूँ नज़क हक्क के ले जाने का न पावे दीन की लज्जत जिसे दुनियाँ की ख्वाहिश है फ़ज़ल^५ है लज्जते - दुनिया हक्कीकत के खजाने का नहीं यो आह होर^६ ज़ारी जो सीने होर अखाँ में है समझ बेशक की अफ़सूँ^७ है यह उस पिऊ को लुभाने का मुए को ज्यूँ बख्शा आबे - हैवाँ बेगुमाँ है ज्यूँ नयन में त्यों निज पानी है सोते दिल के जगाने का बिरह के आग में धँसने की नहीं है कुछ फिकर दिल को कि ज्यों ग़म नहीं है इब्राहीम को आतिश में जाने का 'वली' तुझ कूँ रखेंगे शेरे-मर्दा अपनी मजलिस में रहे गर सग^८ होकर दायम नबी के आस्ताने^९ का



मुफ़्लसी बेकसी की फौजाँ ने
शहर-दिल कूँ किया है वीराँ आ



मज़हबे - इश्क में तेरी सूरत
देखना हम कूँ फ़ज़े-ऐन हुआ

१. बेकार २. बुझा हुआ ३. फूल ४. राही ५. मेहर
६. और ७. जादू ८. कुत्ता, यहाँ वफ़ादार ९. चौखट।

लिया है जब सूँ मोहन ने तरीका खुदनुमाई का
 चड़या है अरसी पर तब सूँ रंग हैरत फ़ज़ाई^१ का
 अपसकी जुल्फ़ का फ़िर केश की भलकार टुक दिखला
 कि ज़ाहिद बेखबर दम मारता है पारसाई^२ का
 सूरज कूँ गर इजाज़त होतो आवे सीस सूँ चलकर
 कि उसकूँ शौक है तुझ आस्ताँ^३ पर जब हसाई^४ का
 मिरे दिल की हक्कीकत यूँ हुई है शोहरहे - आलम
 कि ज्यूँ मज़कूर-हूँ^५ है जग में तेरी दिल सबाई का
 करेता तुझ शकर-लब से तलब इक बोसा-ए-शीरीं
 मिरे दिल ने लिया है इस सबब शेवह-गदाई^६ का
 जू कुई तेरी सिया-चश्माँ^७ कूँ समझा बेमुरव्वत कर
 भरोसा क्यों के होवे उसकूँ तेरी आशनाई का
 सजन की अंजुमन में हुए तब हरयक तबीह^८ रोशन
 'वली' चर्चा अच्छे मजलिस में जब तबे-आजमाई का



तुझ लब की सिफ़त लाल-ए-बदख्शाँ^९ से कहूँगा
 जादू है तेरे नयन गज़ालाँ^{१०} से कहूँगा
 दी बादशही हक्क ने तुझे हुस्ने - नगर की
 यो क़श्वरे - ईराँ^{११} मैं सुलेमाँ से कहूँगा

१. अधिक आश्चर्य २. दानाई, बड़प्पन ३. चौखट ४. माथा
 रगड़ने ५. आगाही, ज़िक्र ६. माँगने का ढंग, आदत ७. काली
 आँखें ८. तबीयत ९. बदखस्तान—एक शहर (अफ़गानिस्तान)
 यहाँ मतलब—वहाँ के खूबसूरतों से है १०. मृग-शावक ११. ईरान
 में एक मुल्क, जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध था।

निकला है वो सितमगर तेगे - अदा कूँ लेकर
सीने का आश्काँ के अब फ़तहयाब होगा



तहरीफ़ तेरे क़द की अलिफ़वार^१ सरीजन
जा सर्वे-गुलिस्ताँ कूँ खुश-इलहाँ सूँ कहूँगा
मुझ पर न करो जुल्म तुम ऐ लैला-ए ख़ूबाँ^२
मज़नूँ हूँ, तेरे ग़म को बियाबाँ सूँ कहूँगा
देखा हूँ तुझे ख़वाब में ऐ माह-ए-ख़ूबी^३
इस ख़वाब को जा यूसफ़े-कुनहा सूँ कहूँगा
जलता हूँ शबो-रोज़ तिरे ग़म में ऐ सजन
यह सोज़ तेरा मशहले - सोजाँ^४ सूँ कहूँगा
यकलकृत तिरे सफ़ - ए - रुख़ पर नहीं बेजा
इस मुख कूँ तिरे सफ़ - ए - कुराँ से कहूँगा
कुर्बानि परी मुख प हुई चौब-सी जलकर
ये बात अजायब महे-ताबाँ^५ से कहूँगा
वेसब्र न हो ऐ 'वली' इस दर्द सूँ हर्गिज़
चलता हूँ तिरा दर्द मैं दरमाँ^६ से कहूँगा



रखता है क्यों जफ़ा को मुझ पर रखा ऐ ज़ालिम
महशर में तुझ सूँ मेरा आखिर हिसाब होगा

१. क्रमशः २. सुन्दरी लैला ३. चाँद-सी सुन्दर ४. दुखिया
५. चाँदों से, यहाँ सुन्दरों से ६. चिकित्सक, इलाज करने वाले।

मुझे अचरज यही आता पिया के पान खाने का
न जानूँ क्या सबब याकूत^१ असली के रंगाने का



इस कद सूँ जिस चमन में वो नौनिहाल होगा
क्या सर्व क्या सनोबर हरयक निहाल होगा
आवेगा गर सुखन में वो माह - ए - लताफ़त^२
शर्मिन्दा उसके आगे आबे - ज़लाल^३ होगा
आलम में जो हुआ है तालब तिरी भवाँ का
उसके नगीने-दिल पर नक्शे-हिलाल^४ होगा
है उसके हङ्क में हर शब मानिन्द रोज़े-महशर^५
जिसकूँ फ़िराके-जानाँ^६ सीने का साल होगा
मअ़नी के जो चमन में है बुलबुले-मुअ़नी^७
तुझ गुलबदन के देखे रंगीं ख़याल होगा
ज्यों शमअ-ए-गुल पड़ेंगे, शर्मिन्दगी सूँ गुलरु
जिस अंजुमन में हाज़िर गोबिन्द लाल होंगा
अलबत्ता वसफ़^८ तेरा लावेगा हर सुखन में
जो शेर में 'वली'-सा साहिब-कमाल होगा



बायसे - नशा दो बाला है
हसीने-सूरत के साथ हसीने-अदा

१. लाल जवाहिर, प्रिय के लाल होंठ २. सुन्दर चाँद, चाँद-सा
सुन्दर प्रिय ३. प्रकाश की चमक ४. ईद के चाँद का चित्र ५. प्रलय
का दिन ६. प्रिय-विरह ७. इच्छित ८. प्रशंसा।

तुझ हुस्ने-आलम ताब का जो आशिके-शैदा^१ हुआ
 हर ख़बरु^२ के हुस्न के जल्वे सूँ पेपरवाह हुआ
 देखा है तेरी ज़ुल्फ़ के हल्के को जिनने यक नज़र
 तुझ खाल^३ के नुक्ते नमन वो बे-सरो-बे-पा हुआ
 जिस वक्त सूँ तुझ क़द के तई लाए हैं शायर फ़िक्र कर
 उस वक्त सूँ आलम मने निरखे-सुखन बाला^४ हुआ
 है سलह^५ कल के गौहराँ मेरे सुखन सूँ जल्वागर
 अज़बस कि वसहते-मशरबी^६ सूँ दिल मेरा दरिया हुआ
 पाया है जग में ऐ 'वली' वो लैला-ए मक्सूद को
 जो इश्क़ के बाज़ार में मजनूँ नमन रुसत्रा हुआ



जब सनम कूँ ख़याले-बाग़ हुआ
 तालबे - नश्शा - ए - फ़राग़ हुआ
 फौजे - उश्शाक़ देख हर जानिब
 नाज़नीं साहिबे - दिमाग़ हुआ
 रश्क़ सूँ तुझ लबाँ की सुखीं पर
 जिग़रे - लाला दाग़ - दाग़ हुआ
 दिले - उश्शाक़ क्यों न होवे रोशन
 जब ख़याले - सनम चिराग़ हुआ
 ऐ 'वली' गुलबदन कूँ बाग़ में देख
 दिले - सदचाक बाग़ बाग़ हुआ

१. प्रेमी, मस्त २. सुन्दर ३. नक्शा, चेहरा ४. बड़ा, अधिक
 ५. प्रसिद्ध ६. पीने के स्थान पर फ़िराग़ दिली।

गमजाँ^१ की फौजाँ बाँध कर आए हैं रावत^२ नयन के
हर मूँ पलक का हाथ में उनके सूँ ज्यूँ भाला हुआ



जल्वागर जब सूँ वो जमाल^३ हुआ
नूरे - खुशीदि पामाल हुआ
फैजे - तशबीहे - क़दे - दिलबर^४ सूँ
सर्व गुलशन मने निहाल हुआ
नशा - ए - सब्जिए - खते - खूबाँ^५
वाली आलमे - ख़याल हुआ
याद कर तुझ भवाँ की बेते - बुलन्द^६
महे - नौ साहिबे - कमाल हुआ
देखकर तुझ निगह की शोखी
होशे - आशिक़ रमे - ग़ज़ाल हुआ
हुस्न उस दिलरबा का मुहृत सूँ
अक्से - आईना - ए - ख़याल हुआ
वसफ़ में तुझ भवाँ के हर मिस्त्रा
सानि-ए-मिस्त्रा-ए हिलाल हुआ
जिन ने देखा है तुझ निगह की तेझ
फिर के जीना उसे मुहाल हुआ
अज़ल^७ मज़नूँ के बाद मुझ कूँ 'वली'
सूबा - ए - आशिक़ी बहाल हुआ

१. संकेत २. सैनिक ३. प्रकाश, प्रिय ४. दिलबर से उपमा
देने का फायदा ५. सुन्दर प्रिय के मुख पर तिल देखने से नशा ६. छन्द
ऊँचा हुआ, अच्छी कविता लिखी ७. मृत्यु।

वो मिरा मङ्गसूदे - जानो - तन हुआ
जिसका मुझ कूँ रात-दिन सिमरन हुआ
मशल मीना-ए-शराबे^१ - बज़मे-हुस्न^२
हौज़े-दिल तुझ अक्स सूँ रौशन हुआ
नूर का है गंज तेरा यो जमाल
हुस्न के गौहर का तूँ मुअदन^३ हुआ
बस कि यादे - हुस्न सीरतबख्श^४ है
दिल मिरा साफ़ी^५ में ज्यूँ दरपन हुआ
जो 'वली' है मरजहा^६ हर जज़ो-गुल^७
वो मेरा मङ्गसूदे - जानो - तन हुआ



फिर मेरी खबर लेने वो सच्चाद न आया
शायद मिरा हाल उसे याद न आया
मुहृत सती मुश्ताक़ हैं उश्शाक़ जफ़ा के
बेदाद कि वो ज़ालिमे-बेदाद न आया
जारी किया हूँ जुए-रवाँ अश्के-रवाँ^८ सूँ
अफ़सोस कि वो ग़ैरते-शमशाद^९ न आया
जिस ग़म मने मोजूँ किया हूँ आह का मिस्त्रा
वो मिस्त्र-ए-दिलचस्प परीज़ाद न आया
पहुँची है हरेक गोशे में फरियाद 'वली' की
लेकिन वो सनम सुनने कूँ फरियाद न आया

१. शराब की सुराही २. हसीनों की सभा ३. आमादा करने
वाला ४. अच्छी आदत, स्वभाव ५. साफ़ ६. बढ़कर ७. फूलों
से भी ८. बहते आँसू ९. शमशाद के पेड़ की ऊँचाई को शर्मने
वाला, प्रिय।

क्यों आशिकाँ की सफ़ में पावें वो सुर्खरुई
जिनकी अँखियाँ के ऊपर खूने-जिगर न आया



सद - हैफ़^१ कि वो यार मेरे पास न आया
मेरा सुखने - रास्त^२ उसे रास न आया
बेगानी लगी बात यगाने^३ की अजब है
आखिर कूँ उसे गैर सूँ विसवास न आया
बुलबुल की नमत नाला-ओ-जारी में हूँ निसदिन
अफ़सोस वो गुलदस्ता-ए-खुशबास^४ न आया
उस यार-वफ़दार सूँ मुझ आस थी लेकिन
हर्गिज़ वो बुझाने कूँ मेरी प्यास न आया
मैं अम्ब-नमत तन कूँ लगाया हूँ अपस के
वो बाग़े-मुहब्बत का अनानास न आया
जिस बाज मेरे सीने पे हर आन है यक साल
उस माह बिना तन में मिरे मास न आया
यो बात 'बली' दिल की स्याही सूँ लिखा हूँ
वो नूरे - नयन हैफ़ मेरे पास न आया



आज तुझ याद ने ऐ दिलबर शीरीं हरकात
आह कूँ दिल के ऊपर तेशा-ए-फरहाद किया

१. अफ़सोस २. अच्छा सुखन, प्रेम भाव ३. रिश्ते ४. सुग-
न्धित फूलों का गुलदस्ता, फूल-सा सुन्दर प्रिय।

मस्ती ने तुझ नयन की मुझे बेखबर किया
दिल कूँ मिरे भवाँ ने तिरी ज्यूँ भँवर किया
तेरी निगह के तीर की हैबत^१ कूँ दिल में रख
सूरज ने तन अपस का सरासर सपर^२ किया
तुझ मेहर का हुआ है दिलो-जाँ सूँ मश्तरी^३
जब सूँ तेरे जमाल पे मैंने नज़र किया
तब सूँ हुआ है महमले-लैला^४ की शक्ल दिल
जब सूँ तिरे ख़्याल नि दिल में गुज़र किया
ज्यों सर्व बेख़िज्जाँ हैं जहाँ में, वो सञ्ज-बख्त^५
तेरे क़दे - बुलन्द पे जिन ने नज़र किया
हर शब तिरी ज़ुल्फ सूँ मतवल^६ की बहस थी
तेरे दहन कूँ देख सुखन मुक्तसर किया
हक़ तुझ अ़ज़ार^७ देख के सरजा है रंगे-गुल
पैदा तिरे लिबास सती शहदो-शकर किया
देखा है यक निगाह में हक़ीक़त के मुल्क कूँ
जब बेखुदी की राह में दिल ने सफर किया
तेरा यो शेर जग में मवसर^८ है ऐ 'वली'
तू दिल मने हरएक के जाकर असर किया

१. डर २. अस्त ३. गाहक ४. ऊँट सवार, लैला, भयभीत
५. सौभाष्टवान ६. लम्बाई, लम्बा किया हुआ ७. गाल
८. प्रभावपूर्ण ।

कश्वरे^१-दिल कुं तिरे नाज़ ने तस्खीर^२ किया
 फौजे-मजनूं कुं तिरी जुल्फ़ ने जन्जीर किया
 पेच सूं नक़्दे - दिल आशिके - बेताब कुं ले
 जुल्फ़ कुं अपनी परीरु ने गिरहगीर^३ किया
 आशिके-जार समझ मुझ सूं हुआ है बेजार
 नक़्दे-दिल दे के मैं दिलदार कुं दिलगीर^४ किया
 नाला-ए-शौक^५ ने शौले की जबाँ सूं ज्यूं बर्क^६
 दरस में शोख के आशिक^७ की तक़रीर किया
 क्योंकि ज़राते-जहाँ^८ तुझकुं परस्तश^९ न करें
 हक़ ने तुझ हुस्न कुं खुशीदे-जहाँगीर^{१०} किया
 ग़र्दे-ग़म^{११}, आबे-नयन^{१२} दर्द के महमार^{१३} ने ले
 खाना-ए-इश्क़ जिगर सोज़ कुं तहमीर^{१४} किया
 ऐ 'वली' शोख की जुलफ़ाँ की सियाही लेकर
 किस्सा-ए हाले-परेशाँ कुं मैं तहरीर किया



वो भवाँ हम सूं क्यों न हों बाँकी
 माहे - नौ ने जिसे सलाम किया
 ग़मज़ए - शोख ने ब-नीमे - निगाह
 काम उश्शाक़ का तमाम किया

१. दिल का देश २. बेग़ार ३. सम्भाल लिया ४. उदास ५. शोक
 के कारण रोना ६. बिजली ७. संसार के कण, तत्त्व ८. पूजा ९. खुशीद
 के समान ऊँचा, बड़प्पत्युक्त १०. ग़म की धूल ११. आँसू १२. निर्माता,
 राज, मिस्तरी १३. निर्माण ।

तेरे मुख पर ऐ नाज़नीं यो नकाब
 भलकता है ज्यों मतलुह^१-ए आफताब
 अदा फहम के दिल की तस्खीर^२ कों
 तिरा कद है ज्यूं मिस्रा-ए इन्तखाब^३
 बजा है तिरे हुस्न की ताब सूं
 तिरी जुल्फ़ खाली है गर पेचो-ताब
 नज़र करके तुझ मुख की साफ़ी^४ उपर
 हुई शर्म सूं आरसी ग़र्के - आब^५
 तिरे अक्स पड़ने सूं ऐ गुलबदन
 अजब नहिं अगर आब होवे गुलाब
 तिरे वस्ल में इस कदर है निशात^६
 कि मखमल कूं आए हैं राहत सूं ख्वाब
 करें बख्त^७ मेरे अगर टुक मदद
 'वली' उस सजन सूं मिलूं बेहिजाब



जब सूं वो नाज़नीं की मैं देखा हूं छब अजब
 दिल में मिरे ख़याल हैं तब सूं अजब-अजब
 जाता है दिन तमाम उस मुख की याद में
 होता है फ़िक्रे-जुल्फ़ में अहवाले-शब अजब

१. उगता सूर्य २. बेग़ार ३. चुनाव, संकलन ४. सफ़ाई, सुन्दरता
 ५. पानी-पानी, शर्मिन्दा ६. खुश ७. भाग्य।

जबाने हाल सूँ कहता है यूँ शमशाद^१ हर सायत^२
 पड़ेंगे कैद में उस क़द कूँ देख आज्ञाद हर सायत
 बचेगा कब तलक ऐ तायरे-दिल^३ रोज़ वहशत सूँ
 निगह का दाम^४ ले आता है वो सय्याद हर सायत
 हुआ है जब सति परवाना दिल ऐ शमआ-रु तेरा
 न कि तुझ चश्म की जाती है बहरे-साद^५ हर सायत
 अपस की चश्मे-मैं कूँ सूँ दिखाकर गर्दिशे - सागर
 सनम करता है मेरे होश कूँ बरबाद हर सायत
 तेरा खत खौफ में है हाथ सूँ मक़राज^६ के दायम
 कि ज्यूँ रखता है कूवक^७ वहशते - उस्ताद हर सायत
 नहीं यक आशिको - माशूक^८ उसके दर्द सूँ खाली
 गुलो - बुलबुल सूँ सुनता हूँ यहो फरियाद हर सायत
 'बली' मुझ दिल में बस्ता है ख़याल उस सर्व क़ामत^९ का
 कि जिसके शौक^{१०} सूँ जुम्बश में है शमशाद हर सायत



गुमराह हैं तुझ जुल्फ में कई अहले-हिदायत^१
 यह बाट है जुल्मात की नहिं जिसकूँ निहायत^२
 ग़मज़ो ने किया जुल्म मिरे दिल पे सो तिस पर
 करते हैं तेरे नयन वो ज़ालिम की हिमायत

१. ऊँचा वृक्ष, सर्व जैसा २. तरफ ३. पतंग रूपी दिल ४. फन्दा
 ५. समुद्र-सी फैली ६. काटने का औजार ७. छोटा बालक ८. सर्व
 जैसा ऊँचा क़द, सुन्दर प्रिय ९. हिदायत करने वाले, उपदेशक
 १०. अत्यधिक ।

उश्शाक़ का है खून रवा इश्क़ की रह में
तुझनयन के मुफ्ती^१ सूंसुनया हूँ यह रवायत^२
यो मुख है तिरा मरवे-अनवार-इलाही^३
नाज़ल^४ है तिरे हुस्न पे सब हक्क की इनायत
हर दर्द पे कर सब्र 'वली' इश्क़ की रह में
आशिक़ कूँन लाज़िम है करे दुख की शिकायत



मिलता नहीं मुझ सूँ वो दिलदार अल्खयास^५
उस बेवफ़ा के जोर सूँ सदवारे अल्खयास
मुझ दिल का देख हाल परेशाँ हो आप सूँ
करते हैं तेरी जुल्फ़ के हरतार अल्खयास
नहिं देखता है बाग़ में नर्गिस कूँ ऐ सनम
तेरी अँखियाँ का आज तलबगार अल्खयास
तेरी नयन कूँ देख के गुलशन में गुलबदन
नर्गिस हुआ है शौक़ सूँ बीमार अल्खयास
बाज़ार में जहाँ के नहीं कोई ऐ 'वली'
तेरे सुख़न का आज ख़रीदार अल्खयास



तुझ शमा-रु से रोशन होती है शब की मजलिस
माशूक चाहते हैं परवानगी वहाँ की

१. न्यायाधीश २. रिवाज, ढंग ३. इलाही का प्रकाश, सौन्दर्य
४. प्रगट ५. दुहाई।

शोख मेरा बे-मया है अल्खयास
 साहिबे - जोरो - जफ़ा है अल्खयास
 वो सनोबर कमते - गुलज़ारे - हुस्न
 महश्नै^१ - नाज़ो - अदा है अल्खयास
 उस कमाँ - अब्रू का हर तीरे - निगह
 ज्यों खदझै^२ - बेखताः^३ है अल्खयास
 पायमाले - कातिले रंगीं - अदा^४
 खूने-आशिक़ ज्यूं हिना है अल्खयास
 हूँ पिया के शरबते-लब बिन मरीज़
 जिस नयन गुलकन्द-सा है अल्खयास
 जिन ने दीवाना किया है खल्क कूँ
 वो परी - रु क्या बला है अल्खयास



तुझ नयन में जी दामे - मुहब्बत^५ देखा
 तुझ लब मने दिल-जामे मुरव्वत देखा
 तुझ मुख के भीतर रोज़ दिसा रोशन मुझ
 तुझ जुल्फ़ में दिल शामे - मुशक्कत देखा



मुख तिरा बहरे - हुस्न^६-ओ जुल्फ़ाँ मौज^७
 गर्दिशे - चश्म ऐन तूफ़ाँ है

१. प्रलयङ्कर २. अचूक तीर ३. नाश तथा क़त्ल करने वाली
 कटाली अदा ४. प्रेम-जाल ५. सौन्दर्य-सागर ६. लहर ।

है जल्वागर सनम में बहारे-अताब^१ आज
लेना है उसके नाज़ो-अदा का हिसाब आज
आलम का होश क्योंकि रहेगा अजब हूँ मैं
चिकना है उसके नयन सूँ रंगे-शराब आज
क्या नाज़, क्या ग़रूर है उस नौबहार में
देता नहीं सलाम का मेरे जवाब आज
क्यों मू-नमन^२ ज़हीफ़^३ न हों ग़म सूँऐ सनम
तेरी कमर ने मुझ कूँ दिया पेचो-ताब आज
तेरे रंगे-लबाँ के, कि हैं चश्मा-ए-हयात^४
लगता है आबे-खिज़र^५ मशाले-सुराब^६ आज
उसकी निगाहे - मस्त सूँ मालूम यूँ हुआ
अक्सर करेगी खाना-ए-आशिक़ ख़राब आज
एजाजे-हस^७ देख कि वो रोए बा-अरक^८
पैदा किया है चश्मा-ए-आतिश^९ सूँ आब आज
क्या बेखबर हो ऐ मुहल्लम^{१०} सनम कूँ देख
मक्तब^{११} में उसके भूल गया है किताब आज
मालूम नहीं कि हाथ में शमशीर ले सनम
आता है किसके कत्ल कूँ ऐता शिताब आज
क्यों आरजूए-वस्ल करूँ उस सूँ ऐ 'वली'
देता नहीं है नाज़ सूँ सीधा जवाब आज

१. गुस्से की बहार, चमक २. बाल के समान ३. दुबला, पतला
४. अमृत का स्रोत ५. अमृत ६. रेगिस्तान ७. आदत को पूछने की
शक्ति ८. पसीना होकर ९. ज्वालामुखी १० आलिम-फ़ाज़िल, ज्ञानी
११. स्कूल।

मैं आशकाँ की फौज का सरदार हूँ 'बली'
मुझ आह का हुआ है इल्म ता-आस्माँ^१ बुलन्द



तेरी निगह की सख्ती है दिलबरी की मानिन्द
तेरी निगह मोजूँ है अबहरी^२ की मानिन्द
ज़ाहिर नहीं किसी पर तुझ लाल की हकीकत
वाकिफ़ हुआ हूँ इस सूँ मैं जौहरी की मानिन्द
हर चन्द रंगे - ज़र्दी हासिल है आशिको कूँ
लेकिन शिगफ़तारु^३ हैं गुले-जहफ़री की मानिन्द
ताकृत नहीं किसी कूँ ता उस सनम कूँ देखे
आलम की है नज़र सूँ पिन्हाँ^४ परी की मानिन्द
यह रेखता^५ 'बली' का जाकर उसे सुनाओ
रखता है फिक्र रोशन जो अनवरी^६ की मानिन्द



मुश्ताक् तुझ दरस का ऐ शमा बज्मे - खूबी^७
देखा नहीं हैं दूजा हर्गिज़ 'बली' की मानिन्द



मुख तिरा ज्यों रोज़े-रोशन, जुल्फ़ तेरी रात है
क्या अजब यह बात है यकठार दिन औ रात है

१. आकाश तक २. सुगन्धित, सफूफ ३. खिला हुआ ४. छिपा
हुआ ५. उर्दू की कविता ६. प्रकाश ७. सभा की सुन्दरता।

अब जुदाई न कर खुदा सूँ डर
 बेबफाई न कर खुदा सूँ डर
 रास्त केशाँ^१ ऐ कमाँ अबरु
 कज अदाई^२ न कर खुदा सूँ डर
 मत तगाफुल^३ कूँ राह दे ऐ शोख
 जग-हँसाई न कर खुदा सूँ डर
 है जुदाई में जिन्दगी मुश्किल
 आ जुदाई न कर खुदा सूँ डर
 आश्काँ कूँ शहीद करके सनम
 कफ-हिनाई^४ न कर खुदा सूँ डर
 आरसी देख कर न हो मगरुर
 खुदनुमाई^५ न कर खुदा सूँ डर
 उस सूँ जो आशनाए-दर्द नहीं
 आशनाई न कर खुदा सूँ डर
 रंगे आशिक गजब सूँ ऐ ज़ालिम
 कहरबाई न कर खुदा सूँ डर
 ऐ 'वली' गैर-आस्तान-ए-यार^६
 जबहसाई^७ न कर खुदा सूँ डर



ऐ सनम, आया हूँ हो बे अख्तियार
 तुझ कूँ अपना राहते-जाँ^८ बूझ कर

- | | | | |
|---------------------------|----------------|-----------|------------------|
| १. सुलझे किश | २. टेढ़ी अदा | ३. कल्पना | ४. मेहँदी की भाग |
| ५. आत्म-अभिव्यक्ति, गुमान | ६. यार की चौखट | | ७. माथा |
| रगड़ना | ८. जान का चैन। | | |

पड़ा हूँ कोह-गम^१ में इस दिले-नाशाद^२ सूँ जाकर
 दुआ बोलो मिरी जानिब सूँ कुई फरहाद सूँ जाकर
 बिरह के हाथ सूँ गरदाबे-गम^३ में जा पड़ा है दिल
 कहो मेरी हकीकत चर्ख^४ बेबुनियाद सूँ जाकर
 गिरफ्ताराँ की ग़मखारी इता लाज़िम हुई तुझ पर
 हकीकत मर्ग-दिल^५ की यूँ कहो सय्याद सूँ जाकर
 किया है खून ने सौदा^६ के गल्बा तन मने मेरे
 निगह के नश्तरे कूँ ला कहो फ़स्साद^७ सूँ जाकर
 'वली' उस क़द का तालिब है मुबारिकवाद आबोलो
 कहो समझा के गुलशन में हर इक शमशाद सूँ जाकर



आजजाँ^८ के ऊपर सितम मत कर
 इस क़दर सख्ती ऐ सनम मत कर
 इस तरक्की के वक्त में ऐ शोख
 मेहरबानी अपस की कम मत कर
 रहम बेजा सितम बराबर है
 यूँ रकीबाँ ऊपर करम मत कर
 इस नसीहत कूँ गौशे,- जाँ^९ सूँ सुन
 दिल कूँ अपने मकाने-गम मत कर
 शम^{१०} तुझ अमर का हुआ है 'वली'
 गर है इन्साफ़ उस सूँ रम^{११} मत कर

१. गम के पहाड़ २. नाखुश दिल ३. गम के बुलबुले ४. आकाश
 ५. मरे हुए दिल ६. उन्माद, पागलपन ७. खून लेने वाला ८. कम-
 ज़ोर ९. मन से १०. ताबेदार, कृपाकांक्षी ११. गिला।

जुल्फ़ तेरी क्यों न खावे पेचो-दाब
हाल मुझ दिल का परेशाँ बूझ कर
रहम कर उस पर कि आया है 'वली'
दर्दें-दिल का तुझ कुँ दरमाँ^१ बूझकर



चमन में जब चले उस हुस्ने-आलम ताब सूँ उठकर
करे तहजीम^२ खुशबू हर गुले-सेराब^३ सूँ उठकर
करे गर आरसी घर में लिजा तुझ मुख की महमानी
धुलावे हाथ कुँ तेरे अपस के आब सूँ उठकर
तिरे अबरु की गर पहुँचे खबर मस्जिद में ज़ाहिद^४ की
तमाशा देखने आवे तिरा महराब^५ सूँ उठकर
तेरे पावाँ की नरमी की अगर शोहरत हो आलम में
वहीं आवे क़दम-बोसी^६ कुँ मखमल ख्वाब सूँ उठकर
'वली' तुझ जुल्फ़ की गर सहर-साजी^७ का बयाँ बोले
चले पाताल सूँ बासक^८ सौ पेचो-ताब सूँ उठकर



तुझ मुख का है यह फूल चमन की ज़ीनत^९
तुझ शमआ का शौला है अगन की ज़ीनत
फिरदौस^{१०} में नर्गिस ने इशारे सूँ कहा
"यह नूर है आलम के नयन की ज़ीनत"

१. इलाज २. आदर ३. प्यासरहित या खिले फूल ४. उपदेशक
५. टेढ़ा नाक ६. कदम चूमने को ७. घूँघर ८. बासुकी, नागराज
९. शोभा १०. स्वर्ग।

जो आया मस्त साकी जाम ले कर
 गया यक बारगी आराम ले कर
 निगह तेरी सदा आती है ज्यूं तीर
 दिले - ज़ख्मी तरफ पैग़ाम ले कः
 न जानूं ख़त तिरा किस बेख़ता पर
 चला है आज फौजे-शाम^१ ले कर
 उड़ा आहूए-दिल^२ सूं रंगे-वहशत^३
 जो आई जुल्फ़ तेरी दाम^४ ले कर
 जू कुई बाँधा है तेरी जुल्फ़ में दिल
 सटा है कुफ़^५ में इस्लाम ले कर
 तिरे लब होर तिरी अँखियाँ कूं हदिया^६
 चला हूँ पिस्त-ओ बादाम लेकर
 बनाई है जहाँ में लैलत-उक-कदरे^७
 सियाही तुझ जुल्फ़े की दाम ले कर
 तिरी साकीगरी कूं लाल - ए - बाग
 खड़ा है मुन्तज़र हो जाम ले कर
 मैं उस कूं ज्यों नगी^८ करता हूँ सिज़दा
 जू कुई आता है तेरा नाम ले कर
 'वली' तेरे लबाँ सूं ऐ तुनके-तबीह^९
 चला लज़ते-दुश्नाम ले कर

१. अँधेरे की सेना २. मन रूपी हिरन ३. डरा दिल ४. फन्दा
 ५. नरक ६. भेंट ७. काली रात ८. तुनुक मिजाज ।

मत जा सजन कि होशे-दिल आया नहीं हनूज़^१
 मैं दर्द अपस का तुझ कूँ सुनाया नहीं हनूज़
 इस चश्मे-अश्कबार^२ सूँ मेरी अजब न कर
 सीने का दाग तुझ दिखाया नहीं हनूज़
 तुझ लुत्फ के ज़लाल ने ऐ माह-ए-हयात^३
 मेरे सिने की आग कूँ बुझाया नहीं हनूज़
 हूँ गर्वे खाकसार वले अजरहे-अदब^४
 दामन कूँ तेरे हाथ लगाया नहीं हनूज़
 अपनी अँखाँ के नूर कूँ तेरे कदम तले
 ऐ नूर, दीदहे-फर्श बिछाया नहीं हनूज़
 ज़ाहिद अगर्वे फहम^५ में है बू-अली-ए-वक़्त^६
 मेरे सुखन के रम्ज़^७ कूँ पाया नहीं हनूज़
 आज़ाद अपने इश्क़ सूँ मत कर 'वली' के तई
 तेरा गुलाम जग में कहाया नहीं हनूज़



मुझ दिल कूँ डसने ऐ सनम, तुझ जुल्फ का यक तार बस
 करने मुझे कैदे-फरङ्ग तुझ जुल्फ का जुन्नार बस
 हर्गिज़ न देखूँगा सजन जन्मत के मैं गुलज़ार कूँ
 रोज़े-अज़ल^८ सीं मुझ कूँ है तुझ हुस्न का गुलज़ार बस
 खते-गुलामी लिख दिया कल तुझ कूँ ऐ नाज़ुक बदन
 उसके लिखे का हश्श लग हैगा मुझे इक़रार बस

१. अभी २. बहती आँखें ३. पूर्णमाशी का चाँद, चाँद-सा सुन्दर
 प्रिय ४. अदब की राह में खाक समान ५, ६. समय के लालच में
 कोयला, जला हुआ ७. तौर, भाव ८. प्रलय के दिन।

है ज़ाहिदों के हाथ में तस्बीह नित इस्लाम की
उस काफिरे-बद-कैश^१ के काकल^२ का मुझ जुन्नार बस
उस आरसी कूँ हाथ में क्यूँकर रखूँ आखिर 'वली'
है शौक सीं तुझ हुस्न के दरपन का मुझ दीदार बस



मैं जब सती देखा हूँ बहारे - गुले - नर्गिस^३
है वहशि-ए-दिल^४ तब सूँ शिकारे-गुले-नर्गिस
क्यों बारे-निगह हुए तुझ अँखियाँ के चमन में
पलकाँ हैं मिरी खार हिसारे^५ - गुले - नर्गिस
बीमार है ऐ यार तिरी चश्म के दूराँ
आ देख टुक यक दीदा-मू-ज़ारे^६-गुले-नर्गिस
नर्गिस ने किया उसके नयन देख ज़ेर-ऐसार^७
कर नक्दे-दिल अपने कूँ निसारे-गुले नर्गिस
आया है 'वली' मुतलहे-रंगीं^८ ले तिरे पास
यो मुतलहे - रंगी ले बहारे - गुले नर्गिस



तुझ इश्क़ सूँ नित बे-सरो-सामाँ हूँ मैं
तुझ जुल्फ़ सूँ बेताब ओ-परेशाँ हूँ मैं
तुझ मुख की सफाई^९ कूँ नज़र में रखकर
मुद्दत सती ज्यूँ आईना-ए हैराँ हूँ मैं

-
१. अधर्मी २. बालों की लट ३. नर्गिस के फूल, नर्गिस के फूल
से कोमल प्रिय की बहार ४. दिल की मस्सी ५. गढ़ी ६. आँख के
बाल, पलकों में ७. बुजुर्गी के अन्दर ८. रंगीन मतला, छन्द या भाव
९. सुन्दरता ।

शोख़ आता नहीं हजार अफ़सोस
 मुख दिखाता नहीं हजार अफ़सोस
 मतरबे-नग्मा-ए-साज़^१ महफ़िले-इश्क़
 तान गाता नहीं हजार अफ़सोस
 बज़मे-इशरत^२ में जाम लब सूँ पिया
 मै पिलाता नहीं हजार अफ़सोस
 वो सजन नाज़ सूँ भली बाताँ
 मन में लाता नहीं हजार अफ़सोस
 पेम^३ नगरी की राहे - ग़ैर 'बली'
 कोई पाता नहीं हजार अफ़सोस



मुद्दत सती ऐ गुलबदन छोड़ा चमन की सैर कूँ
 मुश्ताक़ हूँ तुझ दरस का मुझ कूँ चमन से क्या ग़रज़



सदा जिसके दिल में रहे यादे-यार
 वो रो-रो फिरे हिज्र सूँ ज़ार-ज़ार
 न होवे उसे जग में हर्गिज़ करार
 जिसे इश्क़ की बेक़रारी लगे

१. इश्क़ की महफ़िल में नग्मा गाने वाले, मिरासी २. इशारों
 की अनेकता, सभा ३. प्रेम।

सजन की तेज़े-अबरु^१ सूँ शहादत गाह^२ पाऊँ मैं
मिरे इस कृत्ल होने पर शहीदे-करबला हाफ़िज़^३



दूजा नहीं कुछ मुहूरा इस आशिके-जाँबाज़ को
है आरजू दिल में मिरे पीतम को मिलने की फ़कृत
दखनी-ज़बाँ में शेर सब लोगाँ कहे हैं ऐ 'वली'
लेकिन नहिं बोला है कुई यक शेर खुश्तरज़ीं न मत



इश्क़ की आग सूँ जली है शमा
सर सती ता-क़दम गली है शमा
खब्जे - इश्क़^४ सूँ कटा सर कूँ
मर्गे-बिस्मिल^५ हो तलमली है शमा
जब सती देखा तिरे नूर के तई
यक क़दम कहीं नहीं चली है शमा
तुझ लगन के बीच बस कि है सावित
जलने सेती नहीं टली है शमा
क्यों न रोशन हो बज़मे-हुस्न^६ 'वली'
यार के मुख सेती मिली है शमा

१. तीखी भाँवें २. बलिदान-मण्डप ३. कर्बला पर शहीद होने
वाले मुहम्मद साहब, मालिक, गवाह ४. इश्क़ की खब्त ५. मृत्यु का
दुःख ६. सौन्दर्य-सभा।

इश्कः के रम्जः^१ सूँ नहीं आगाह
क्या हुआ तूँ किया किताबाँ जमा



वो आबो - ताब हुस्न में तेरे है ऐ सजन
खुर्दीद जिस कूँ देखकर लरजाँ है ज्यों चिराग़



पड़ी जब नज़र चश्मे-दिलबर तरफ़
हुआ होश यक बारगी बर - तरफ़
'वली' को नहीं माल की आरजू
खुदा दोस्त नहीं देखते ज़र तरफ़



तुझ दहन का कलाम वो बूझे
हकः ने बख्शा है जिसकूँ फ़िक्रे-अ़मीकः^२
ऐ 'वली' आरजू सदा है यही
कि मिले मुझ सूँ वो रफ़ीके-शफ़ीकः^३



देख तुझ में जमाले-हकः^४ का ज़हूर^५
हैं दुआगो^६ फ़लक पे सारे मलक^७

१. ढंग, तौर २. गहरी चिन्ता ३. मेहरबान साथी ४. उचित
प्रकाश ५. अभिव्यक्त ६. प्रार्थनारत ७. फ़रिश्ते ।

मेरी निगह की रह पे ऐ फ़खन्दे-फ़ाल^१ चल
 है रोज़े - ईद आज ऐ अबरु - हलाल^२ चल
 तेरे नयन की दीद कूँ ऐ नूर हर नज़र
 शक नहीं अगर ख़तन-सती^३ आवें ग़ज़ाल चल
 मुम्किन नहीं है तन की तरफ उसकी बाज़े-गश्त
 जो दिल गया है दिलबरे-दिलकश की नाल चल
 पीतम की जुल्फ़ बीच बसा मुझ सवा दिहन्द
 इस राहमार बीच में ऐ दिल सम्भाल चल
 वहदत^४ के मैकदे^५ में नहीं बार होश कूँ
 इस बेखुदी के घर की तरफ सुद्ध को ढाल चल
 ऐ बेख़बर अगर है बुजुर्गी की आरजू
 दुनिया की रहगुज़र में बुजुर्गी की चाल चल
 गर आक़बत^६ के मुल्क ख़वाहिश है सल्तनत
 खुश-ख़सलती के मुल्क में ऐ खुश-ख़साल चल
 मुशिद^७ की मंज़िलत का अगर इज़मे-जज़म^८ है
 साया नमत तू पीर के दायम-बनाल चल
 आया तिरी तरफ़ जू 'वली' तो अजब नहीं
 आते हैं तुझ गली मने साहिब-कमाल^९ चल

१. शुभ शकुन २. पवित्र भैँवों वाले ३. बस्तियों से ४. एकाकी-
 पन ५. मधुशाला ६. अंजाम ७. गुरु ८. शान्ति की इच्छा ९. बड़े
 लोग।

'वली' तेरी गली कूँ देख बोल्या
यही है हिन्द और कश्मीरो-काबुल



तुझ मुख ऊपर है रंग शराबे-अयागे-गुल^१
तेरी जुल्फ है हल्क-ए-दूदे-चिरागे-गुल^२
माशूक कूँ जरर^३ नहीं आशिक की आह सूँ
बुझता नहीं है बादे-सबा^४ सूँ चिरागे-गुल
रहता है दिल पिया के तफहुस^५ में रात-दिन
है कारे-अन्दलीब^६ हमेश सुरागे-गुल^७
आशिक मदाम हाले-परेशाँ सूँ शाद^८ है
आशफ़तगी^९ के बीच है दायम फ़रागे-गुल^{१०}
तुझ दाग सूँ हुआ है चमन जार दिल मिरा
ऐ शोख आके देख तमाशाए-बागे-गुल
जलते हैं पी के शौक सूँ उशशाक रात-दिन
है दिल में बुलबुलाँ के शबो-रोज़ दागे-गुल
यूँ तुझ सुख्तन में नशा-ए-मअ़नी है ऐ 'वली'
ज्यूँ रंगो-बू^{११} की मै सूँ है लबरेज़ अयागे-गुल



'वली' शेर मेरा सरासर है दर्द
खतो-खाल^{१२} की वात है खाले-खाल

- | | |
|----------------------------|--------------------------|
| १. फूलों की शराब का प्याला | २. चिराग के गुल का धुआँ |
| ३. दुःख | ४. प्रातःकलीन हवा |
| ५. खोज | ६. बुलबुल का काम |
| ७. फूल की खोज | ८. खुश |
| ९. विस्मृति | १०. फूलों से नियन-नक्षा। |
| ११. रंग तथा खुशबू | १२. नियन-नक्षा। |

खैर रुवाहाँ मैं हूँ खुदा की क़सम
 मान इस सादिके-आशना^१ की क़सम
 कमनुमाई^२ कूँ मुहम्मा कर-कर
 मत कहीं जा तुझे हया की क़सम
 देख ऐ शोख तेरी बेबाकी
 खौफ मैं हूँ सदा रजा^३ की क़सम
 यक क़दम छोड़ कर न जाऊँगा
 मुझ कूँ है तेरी खाके-पा की क़सम
 लुतफ़ सूँ आ तरफ़ शहीदों के
 तुझ कूँ है शाहे-करबला^४ की क़सम
 बस कि रखता हूँ तुझ क़दम की याद
 दिल हुआ खूँ मिरा हिना की क़सम
 आशिकों कूँ नहीं है मौत सूँ काम
 मरक़दे-पाक-आौलिया^५ की क़सम
 खाकसारी है हक़ आगे मंजूर
 खाके-दरगाहे-मुस्तफ़ा^६ की क़सम
 दिल सूँ अपने निकाल वहमो-खतर
 राह सीधी है रहनुमा की क़सम
 ऐ 'वली' इल्म सूँ यह हासिल है
 गुले-गुलज़ार 'हुल-आई' की क़सम

१. सच्चा प्रेमी २. कमी का भाव ३. उम्मीद ४. पांगों
 की धूल ५. मुहम्मद साहब ६. पीर की दरगाह ७. मुस्तफ़ा की
 दरगाह की खाक।

नाज़ मत कर तुझे अदा की कःसम
 बेतकल्लुफ़ हो मिल खुदा की कःसम
 जुल्फो-बरख़ है तेरा जो लैलो-निहार^१
 मुझ कूँ वाललीलो-अलसिहार^२ की कःसम
 सर्व कद कूँ कशीदहे-कामते-यार^३
 रास्त बोल्या हूँ तुझ अदा की कःसम
 मसहफे-रुख़^४ तिरा है सूरते-फख़^५
 मुझ कूँ वा-अल नज़्मे-अज़ हव्वा की कःसम
 जुल्म मत कर सजन ! 'वली' ऊपर
 तुझ कूँ है शाहे-करबला की कःसम



टुक 'वली' कूँ सनम गले सूँ लगा
 तुझ कूँ है बन्दा परवरी की कःसम



मैखान-ए जग का जिसने सरजोश किया
 उस हाथ सूँ आलम ने कदह^६ नोश किया
 इस सयदे-आलम कूँ जो देखा यक बार
 यकबारगी आलम कूँ फरामोश किया

१. काली जुल्फें २. काले सियाह बाल ३. कढ़े हुए कपड़ों से
 सजा यार का कद ४. साफ़ा बाँधने का स्थान ५. अभिमान योग्य
 ६. शराब

ज्यूँ गुल शिगफ़तारू^१ हैं सुखन के चमन में हम
 ज्यूँ शमा सर बुलन्द है हर अंजुमन में हम
 हम पास आ के बात नज़ीरी^२ की मत कहो
 रखते नहीं नज़ीर^३ अपस के सुखन में हम
 हैं दास्तान बिरह मने मुझ याद कई हज़ार
 उस्ताद बुलबुलाँ के हैं हरयक चमन में हम
 खूबाँ^४ जगत के ज्यों सूँ मिलते हैं हम सती
 कामिल हुए हैं बस कि मुहब्बत के फ़न में हम
 उस शोखे - शौला - रंग सूँ जब सूँ लगन लगी
 जलते हैं तब सूँ शौला नमन इस लगन में हम
 यक बार हँसके बोल सनम नहीं तो हश्य लग
 ज्यूँ बर्क^५ बेकरार रहेंगे कफ़न में हम
 हरचन्द जग के बख्त बया-हूँ मैं है दिसे
 काजल हो, जा बसे हैं सजन के नयन में हम
 फ़रहाद तब सूँ तेशे - नमन^६ सर किया तले
 बाँधे हैं जब सूँ जीव कूँ शीरीं-बचन^७ में हम
 दो जग हुए हैं दिल सूँ फ़रामोश ऐ 'बली'
 रखते हैं जब सूँ याद सरीजन की मन में हम

१. खिले हुए २. एक फ़ारसी का शायर ३. समान ४. सुन्दर ५.
 बिजली ६. तेसी के समान ७. मधुर-भाषी।

शराबे - शौक से सरशार^१ हैं हम
 कभू बेखुद कभू हुशियार हैं हम
 दोरंगी सूं तिरे ऐ सर्व-रअ़ना^२
 कभू राजी, कभू बेजार हैं हम
 तिरे तस्खीर करने में सरीजन
 कभू नादाँ, कभू अय्यार हैं हम
 सनम तेरे नयन की आरजू में
 कभू सालम कभू बीमार हैं हम
 'वली' वस्लो-जुदाई सूं सजन की
 कभू सहरा^३ कभी गुलजार हैं हम



तुझ कद ऊपर जब सूं पड़ी जग में निगाहे-आशिकाँ
 तब सूं गई तौबा-तलक ज्यूं तीर आहे-आशिकाँ
 ज्यूं मुख तिरा यो देखकर माशूक सब आशिक हुए
 तब सूं तू मुल्के-हुस्न में है बादशाहे-आशिकाँ
 साम्राज्य-शानासाँ^४ दंग हैं उश्शाक के अहवाल सूं
 यक-यक घड़ी तुझ हिज्र की है सालो-माहे-आशिकाँ
 पहुँचे हैं मंज़िले-सालिकाँ^५ तुझ हुस्न के परतव सती^६
 यह नूर तेरा ऐ सजन, है शमआ राहे-आशिकाँ
 वो यूसफे-कुनहाने-दिल^७ किस कारवाँ में है 'वली'
 जिसके जनखुदाँ कूं जगत बोले हैं चाहे-आशिकाँ

१. लबालब, पूर्ण २. सर्व के समान ऊँचे, सुन्दर ३. सूखे, मरुस्थल
 से ४. घड़ियाँ गिनने वाले ५. चलने वाले ६. साये से ७. हक्कीकतबाजों
 का दिल।

सजन तुझ इन्तज़ारी में रहें निसदिन खुली अँखियाँ
 मशाले शमआ तेरे ग़म में रो-रो बह चली अँखियाँ
 हुई ज्यों जल्वागर तुझ याद सूँ मुझ दिल में बेताबी
 तपीं शौला नमन गर्मी सूँ ग़म की तलमली अँखियाँ
 जुदाई जब सूँ हुई ज़ाहिर तुधाँ सूँ पूछता है यूँ
 तिरे बिन तेल के ज्यूँ मेल सुरमे की सिली अँखियाँ
 तिरे बिन रात-दिन फिरतियाँ हूँ बन-बन किशन की मानिंद
 अपस के मुख ऊपर रखकर निगह की बान्सली अँखियाँ
 नज़क मेरे करम सूँ ताकि आवे बेहिजाब^१ होकर
 तमाशे में तिरे ज्यूँ आरसी है सैकली^२ अँखियाँ
 तिरी नयनाँ पे गर आहो-तसदक^३ हो तो अचरज नहिं
 कि इस कूँ देखकर गुलशन में नर्गिस ने मली अँखियाँ
 इती रुवाहाँ हैं तुझ हुस्नो-मलाहत^४ होर लताफ़त^५ की
 कि गोया दिल में रखियाँ हैं सदा फ़िक्रे-'बली' अँखियाँ



तेरी अँखियाँ के सामने सुर्मा हुआ हूँ मैं
 ऐ संग दिल, हँसी कूँ तूँ ज़र्रा-नज़र में ला



तुझ गाल परनों^६ का निशान दिस्ता मुझे उस धात का
 रोशन शफ़क^७ पर जगमगे ज्यों चाँद पिछली रात का

१. बेपर्दा २. बाड़ में रुकी, पर्दे में ३. बसीला, सदके करना

४. सलोनापन, लावण्य ५. सौन्दर्य ६. नाखून ७. माकाश।

आशिक के मुख पे नयन के पानी कूँ देख तूँ
 इस आरसी में राजे-निहानी^१ कूँ देख तूँ
 सुन बेकरारे-दिल की अब्बल आह शौला खेज
 तब उस हर्फ में दिल की मुआनी^२ कूँ देख तूँ
 खूबी सूँ तुझ हजूर शमा दमज़नी^३ में है
 उस बेहया की चर्वे-ज़बानी^४ कूँ देख तूँ
 दरिया पे जाके मौजे-रवाँ पर नज़र न कर
 अंभुवाँ की मेरे आके रवानी कूँ देख तूँ
 तुझ शौक का जो दाग 'वली' के जिगर में है
 बेताकृती में उसकी निशानी कूँ देख तूँ



यक बार मेरी बात अगर गोश^५ करे तूँ
 मिलने कूँ रक्कीवाँ के फ़रामोश करे तूँ
 है बस कि तिरी नयन में कैफ़ीयते-मस्ती^६
 यक दीद^७ में कोनीन कूँ बेहोश करे तूँ
 ऐ सर्वे-गुलअन्दाम^८ अपस नक्शे-कदम सूँ
 बरजा है अगर सहन कूँ गुलपोश^९ करे तूँ
 गैरत सूँ करे चाके-ग़रेबाँ^{१०} दिले-पुर खूँ^{११}
 गरगुल की हमायल^{१२} कूँ हम आगोश^{१३} करे तूँ
 ऐ जाने-'वली' वादा-ए-दीदार कूँ अपने
 डरता हूँ मबादा^{१४} कि फ़रामोश करे तूँ

-
१. गुप्त भेद २. मतलब, अर्थ ३. आहें, तेज़ साँस, भभकना
 ४. चिकनी, स्निग्ध ज़बान ५. मन में करना ६. मस्ती का हाल ७. एक
 नज़र ८. सर्व के फूल के समान ९. गुलज़ार १०. दामन फाड़ ११. खूनी
 १२. बग़ल में १३. गोद में १४. खुदा न करे।

क्योंकर छुपा सकूँ मैं तुझ दर्द की हक्कीकत
 है काम आहे-दिल का अफशाए-राज॑ करना
 दर-वादिए-हक्कीकत^२ जिनने कळम रखा है
 अब्बल कळम है उसका इश्के-मजाज़ करना



हुआ है दंग बंगला^३ तिरी नर्गिस के जादू सूँ
 मुअत्तर^४ है सबा-ए-हिन्द^५ तेरी जुल्फ की बू सूँ
 कळसम तेरे तग़ाफुल^६ की कि नर्गिस की कलम लेकर
 तिरी अँखियाँ के जादू कूँ लिखा हूँ खूने-आहो सूँ
 किया है मिस्रा-ए-बर जस्ता-कौसे-क़जहा-मौजूँ^७
 फ़लक मज़मूने-रंगी ले गया तुझ बैते-अबरू^८ सूँ
 सुख्न मेरा हुआ है तब सूँ बाला हर सुख्न ऊपर
 लगा है ध्यान मेरा जब सती उस सर्व-दिलजू^९ सूँ
 हुआ तुझ हुस्न पर दो जग दिवानागर ताजुब नहिं
 अगर मुझसे दिवाने का बँधा दिल तुझ परीरू सूँ
 मुझे गुलशन तरफ जाना बजा है ऐ महे-अनवर^{१०}
 कि मैं पाता हूँ तुझ जुल्फाँ की बू हर रात शबू^{११} सूँ
 'वली' हर शेर सूँ मेरे नज़ाकत जल्वा पैरा है
 बजा है गर लिखूँ उस मू-कमर कूँ खाम-ए^{१२}-मू सूँ

१. भेद प्रगट २. वास्तविकता की वादियों में ३. जादूगर ४. सुग-
न्धित ५. भारत का वायु मण्डल ६. कल्पना ७. इन्द्रधनुष ८. भवों के
छन्द से ९. सर्व-से ऊँचे-तगड़े सुन्दर दिलदार १०. बहार के चाँद
११. रात की रानी, एक फूल १२. बाल-सी बारीक कलम।

फिदाए - दिलबरे रङ्गीं अदा
 शहीदे-शाहदे^१ गुलगँ कबा^२
 हर इक मै-रु के मिलने का नहीं जौक^३
 सुखन के आशना का आशना
 किया हूँ तर्क नर्गिस का तमाशा
 तलबगारे - निगाहे - बाहया
 न कर शमशाद की तारीफ मुझ पास
 कि मैं उस सर्व-कद का मुब्तला हूँ
 किया है अर्ज उस खुशीदह सं^४
 तू शाहे-हुस्न मैं तेरा गदा^५
 सदा रखता हूँ शौक उसके सुखन का
 हमेशा तिश्न - ए - आबे - बक्का^६
 कदम पर उसके रखता हूँ सदा सर
 'वली' हम मशरबे-रंगी-हिना^७



पढ़ते हैं 'वली' शेर तिरा अर्श में क़दीसी^८
 बाहिर है तिरी फ़िक्रे-रसा हदे-बशर^९ सं



साबित रहे क्यों रंग 'वली' उसका जहाँ में
 देखा है जो दिलदार की ज़ुल्फ़ाँ की शिकन कूँ

१. शहीद-गवाह
२. फूल-सी पतली प्रेय
३. मज्जा
४. भिखारी
५. अमृत का प्यासा
६. फरिश्ते
७. मानवीय सीमा।

सजन के बाज आलम में दीगर^१ नहीं
 हमन में है वले हम कुँ खबर नहीं
 'बली' उसकी हक्कीकत क्यों के बूझूँ
 कि जिसका बूझना हदे-बशर^२ नहीं



मैं आशिकी में तब सूँ अफसाना हो रहा हूँ
 तेरी निगह का जब सूँ दीवाना हो रहा हूँ
 ऐ आशना करम सूँ यक बार आ दरस दे
 तुझ बाज सब जहाँ सूँ बेगाना हो रहा हूँ
 बाताँ लगन की मत पूछ ऐ शमा-बज्मे-खूबी^३
 मुहूत सूँ तुझ झलक का परवाना हो रहा हूँ
 शायद वो गंजे-खूबी^४ आवे किसी तरफ सँ
 इस वासते सरा-पा वीराना हो रहा हूँ
 सौदाए-जुल्फे-खूबाँ^५ रखता हूँ दिल में दायम
 जनखेर आशिकी का दीवाना हो रहा हूँ
 बरजा है गरसुनूँ नहीं नासह तिरी नसीहत
 मैं जामे - इश्क पीकर मस्ताना हो रहा हूँ
 किस सूँ 'बली' अपस का अहवाल जा कहूँ मैं
 सर-ता - कदम मैं ग़म सूँ ग़मखाना हो रहा हूँ

१. दूसरा २. मानवी सीमा, शक्ति ३. सभा की शोभा ४. अथाह
 सौन्दर्य, प्रिय ५. सुन्दर प्रिय की लटें।

बातन^१ की गर मदद हो उसे यार कर रखूँ
 अपने सुखन का उसको ख़रीदार कर रखूँ
 उसकी अदा-ओ-नाज़ों खूबी कूँ कर बयाँ
 हर खूबरु^२ कूँ सूरते-दीवार कर रखूँ
 लायक है गर वो शौख कहे अपने फ़ख्त में
 आवे अगर परी तो परस्तार^३ कर रखूँ
 बरजा है गर चमन में कहे वो निगाह कर
 नगिस कूँ अपनी चश्म का बीमार कर रखूँ
 तस्बीह^४ तेरी जुलफ़ कूँ कहने में ऐ सनम
 यक तार दे कि रिश्ता-ए-जुन्नार^५ कर रखूँ
 तेरे ख़याल आने की पाऊँ अगर ख़बर
 सीने कूँ दागे-इश्क़ सूँ गुलज़ार कर रखूँ
 ऐसे नसीब मेरे कहाँ हैं 'वली' कि आज
 उस गुल बदन कूँ अपने गले हार कर रखूँ



यो सुन बात कूँ सेतीं गुल बदन
 खुशी सूँ सुनो खोल अपना दहन
 करे तूँ 'वली' सूँ अगर यक बचन
 रक्कीबाँ के दिल में कटारी लगे

दूर है लेकिन नज़क^१ दिस्ता है मुझ
दिल हुआ तुझ देखने को दूरबीं



रखता हूँ शमए-आह सजन के फ़िराक^२ में
हाजत नहीं चिराग की मेरे रवाक^३ में
आबे-हयाते-वस्ल सूँ सीने कूँ सर्द कर
जलता हूँ रात-दिन मैं पिया तुझ फ़िराक^४ में
सुन कर ख़बर सबा सूँ गरेबाँ कूँ चाक कर
निकले हैं गुल चमन सूँ तिरे इश्तयाक^५ में
ऐ दिल अ़कीके-लब^६ के ये आए हैं मिश्तरी^७
मोती न बूझ ज़हरहे-जबीं^८ के बुलाक^९ में
तेरे सुखन के नगम-ए-रंगीं कूँ सुन 'वली'
डूबा अ़रक^{१०} के बीच 'इराकी'^{११} इराक^{१२} में



तुझ इश्क^{१३} की अगन सूँ सजन जल गया हूँ मैं
तेरी गली की ख़ाक में जा रल गया हूँ मैं
तुझ सोज़ में जला है जो दिल शम्मा की नमन
परवाना हो के उसके ऊपर बल गया हूँ मैं
ऐ आफ़ताब, देख तेरे मुख की रोशनी
बेताब होके मह की नमन गल गया हूँ मैं

१. नज़दीक २. जुदाई ३. छज्जा, गैलरी ४. शौक, चाह ५. लाल
होंठ ६. गाहक ७. द. नाक की नथ के मोतियों की खबी ८. पसीना
१०. इराक-निवासी ।

ये फिर के देखना तिरा मुझ दिल पे घात है
तेरी निगह के रम्ज़ कूँ अटकल किया हूँ मैं
तुझ दिल का देख सोज़ अधिक ऐ 'वली' मदाम
बोला पतझ्ज़ हाथ कूँ याँ मल गया हूँ मैं



छिपा हूँ मैं सदाए-बाँसली^१ में
कि ता जाऊँ परी-रु की गली में
न थी ताकत मुझे आने की लेकिन
बज़ोरे-आह^२ पहुँचा तुझ गली में
अयाँ है^३ रंग की शौखी सूँ ऐ शौख
बदन तेरा क़बाए-सन्दली^४ में
जो है तेरे दहन में रंगो-खूबी
कहाँ ये रझ्ज़ यह खूबी कली में
किया ज्यूँ लफ़ज़ में मञ्ज़नी^५ सरीजन
मुकाम अपना दिलो-जाने-'वली' में



शोला-खू^६ जब सूँ नज़र आता नहीं
तब सूँ अंगारों पे लोटे है 'वली'

१. वंशी की आवाज़ २. आह के बल ३. स्पष्ट, प्रगट है ४. चन्दन
से ठण्डे लवादे ५. अर्थ ६. शोले-सा चमकता सौन्दर्य।

सहर-परवाज़^१ हैं पिया के नयन
 होशे-दुश्मन हैं खुशअदा के नयन
 ऐ दिल उसके आगे सम्हल के जा
 तेगे-बर कैफ़^२ हैं मीरज़ा^३ के नयन
 दिल हुआ आज मुझ सूँ बेगाना
 देख उस रम्जे-आशना^४ के नयन
 जग में अपना नज़ीर^५ रखते नहीं
 दिलबरी में वो दिलरुबा के नयन
 नर्गिस्ताँ कूँ देखने मत जा
 देख उस नर्गिसे-क़बा^६ के नयन
 है वो गुलज़ारे-अबरु^७ का गुल
 हक्क ने जिस को दिए हया के नयन
 ऐ 'वली' किस आगे करूँ फरियाद
 जुल्म करते हैं बेवफ़ा के नयन



खुशकदाँ दिल कूँ बन्द करते हैं
 नाम अपना बुलन्द करते हैं
 अपने शीरीं-सुख्नन^८ कूँ दे के खाज
 सर्द बाज़ारे-कन्द^९ करते हैं

१. सैहरा जैसे उड़ने वाले, चंचल
२. तेग से तीखे
३. मुगल, यहाँ
- सुन्दर
४. प्रियतम का ढंग
५. समान
६. नर्गिस जैसी
७. भँवों रूपी बाग
८. मधुर वचन
९. सफेद शकर।

जिस कूँ बेताब देखते हैं उसे
 अपने ऊपर स्पन्द^१ करते हैं
 बन्द करने कूँ आशिकाँ के सदा
 जुल्फ़ अपनी कमन्द^२ करते हैं
 ऐ 'वली' जो कि हैं बुलन्द ख़याल
 शेर मेरा पसन्द करते हैं



ख़ूबरु^३ ख़ूब काम करते हैं
 यक निगह में गुलाम करते हैं
 देख ख़ूबाँ कूँ वक्त मिलने के
 किस अदा सूँ सलाम करते हैं
 क्या वफ़ादार हैं कि मिलने में
 दिल सूँ सब राम-राम करते हैं
 कम निगाही सूँ देखते हैं वले
 काम अपना तमाम करते हैं
 खोलते हैं जब अपनी जुलफ़ा� कूँ
 सुबहे-आशिक कूँ शाम करते हैं
 साहिबे-लप़ज़ उसकूँ कह सकिये
 जिस सूँ ख़ूबाँ क़लाम करते हैं
 दिल ले जाते हैं ऐ 'वली' मेरा
 सर्व-कद जब ख़राम^४ करते हैं

१. आतिशदान २. तीर, टेढ़ी, तिरछी ३. सुन्दर ४. नाजुक चाल,
 धीमी चाल।

गुले-मक्सद^१ के हार डाले हैं
 नक्दे-हस्ती^२ जो हार डाले हैं
 क्यों न हो राहे-इश्क नश्तरे-ज़ार^३
 तेरी पलकाँ ने खार डाले हैं
 देख उसके नयन के खंजर कूँ
 चश्मे-आहूँ^४ कूँ वार डाले हैं
 क्यों के निकले बिरह के कूचे, सूँ
 जुल्फ तेरी ने मार डाले हैं
 ऐ 'बली' शहरे-हुस्न के एतराफ़
 खत सूँ उसके हिसार^५ डाले हैं



जो पी के नाम पाक पे जी सूँ फ़िदा नहीं
 राजी किसी तरह सती उस पर खुदा नहीं
 ऐ नूरे, जान-ओ-दीदा^६ तिरे इन्तज़ार में
 मुहृत हुई पलक सूँ पलक आशना नहीं
 उश्शाक मुस्तहके-तरहम^७ हैं ऐ अज़ीज
 उनके ग़रीब हाल पे सख्ती रवा नहीं
 नर्झी अपस जबीं सूँ निकाल ऐ शकर-बचन
 उश्शाक पर ग़ज़ब है ये नाज़ो-अदा नहीं

१. भाव रूपी फूल २. अपनी स्पष्ट हस्ती ३. नश्तर सा तेज़, काटने वाला ४. आँख की काली पुतली रूपी हिरण ५. घेरा ६. जान तथा आँख ७. दया का हक्कदार।

ऐ नौबहारे-हुस्नो-गुल बागे-जानो-दिल
 अफ़सोस है कि तुझ मने रंगे-वफ़ा नहीं
 तके-लिबास बस कि किया हैं जहाँ मने
 तेरी गली की खाके-दरा^१ मुझ क़बा नहीं
 डाले उखाड़ कोह^२ कूँ ज्यूँ काह^३ ऐ 'वली'
 आशिक की आह सर्द कि जिसमें सदा नहीं



माशूक है बगल में 'वली' यह सुना हैं मैं
 मत दिल के बाज उसकूँ कहीं जुस्तजू^४ करो



है अगर खातिरे - उशाक अजीज़
 गैर कूँ दरस दिखाया न करो
 पाकबाज़ों में है मशहूर 'वली'
 उस सूँ चेहरे को छुपाया न करो



शोखी-ओ-नाज़ सूँ उशाक कूँ हैराँ न करो
 गदिशे-चश्म कूँ गारतगर इमाँ न करो
 लब तुम्हारे हैं शफ़ाबख़श^५ 'वली' है बीमार
 हैफ़-सद्हैफ़^६ कि इस वक्त में दरमाँ न करो

१. दर की धूल
२. पहाड़
३. पहाड़ खोदने वाला, फरहाद
४. तलाश
५. स्वास्थ्यप्रद
६. अफ़सोस।

ऐ दिल सदा उस शमा पर परवाना हो, परवाना हो
 उस नौ बहारे-हुस्न का दीवाना हो, दीवाना हो
 ऐ यार, गर मंजूर है तुझ आशनाई इश्क की
 हर आशनाए-अक्ल^१ सूँ बेगाना हो, बेगाना हो
 मेरी तरफ सागर-बक़फ़^२ आता है वो मस्ते-हया
 ऐ दिल, तकल्लुफ़ बरतरफ़^३ मस्ताना हो, मस्ताना हो
 उस आशनाए-गौश सूँ होना है मुझ कूँ आशना
 दरियाए-दिल में ऐ सुख्न, दुरवाना हो, दुरवाना^४ हो
 मेरे सुख्न कूँ मेहर सूँ सुनता है वो रंगीं अदा
 ऐ सरगुज़श्ते-हाले-दिल^५ अफ़साना हो, अफ़साना हो
 चाहे कि शाहे-हुस्न कूँ लावे अपस के हुक्म में
 टुक इश्क के मैदान में मरदाना हो, मरदाना हो
 जारी रखेगा कब तलक रस्मे-ज़फ़ा ओ ज़ोर कूँ
 ऐ मअनि-ए-हर जानो-दिल जानाना हो, जानाना^६ हो
 मुझ कूँ खुमारे-हिज्र^७ सूँ पैदा हुआ है दर्द-सर
 ए ग़र्दिशे-चश्मे-परी पैमाना हो, पैमाना हो
 इस वक्त पीतम की निगह करती है मशक्के-दिलबरी
 यह आन ग़फ़लत की नहीं फरज़ाना^८, हो फरज़ाना हो

१. बुद्धिवादी २. लहराता ३. छोड़कर ४. दरवान, लहरा ५. मन
 पर बीते हाल ६. महबूब की भेट ७. वियोग की मस्ती ८. अक्लमन्द।

ऐ अङ्कल, कब लग वहम सूँ यक जा करेगी खारो-खस^१
 आता है सैले-आशिकी वीराना हो, वीराना हो
 आलम में तुझ कूँ ऐ 'वली' है फ़िक्रे-जमीयत^२ अगर
 हर दम ख़याले-यार सूँ हमखाना हो, हमखाना हो



अजब कुछ लुत्फ़ रखता है शबे-ख़िलवत^३ में गुलरू सूँ
 खिताब आहिस्ता-आहिस्ता, जवाब आहिस्ता-आहिस्ता



आज दिस्ता है हाल कुछ का कुछ
 क्यों न गुज़रे ख़याल कुछ का कुछ
 दिल ब-दिल कूँ आज करती है
 शौख चंचल की चाल कुछ का कुछ
 मुझ कूँ लगता है ऐ परो-पैकर^४
 आज तेरा जमाल कुछ का कुछ
 असर बादाए-ख़वानी^५ है
 कर गया हूँ सवाल कुछ का कुछ
 ऐ 'वली' दिल कूँ आज करती है
 बूए - बागे - विसाल^६ कुछ का कुछ



खूबाँ तुझ पे रश्क लजावें तो क्या अजब
 जलता है आफ़ताब यो जाहो-जमाल^७ देख

१. खसखास के काँटे २. मिलन की चिन्ता ३. एकान्त रात ४. सुन्दर ५. शराब पीने का ६. मिलन ७. प्रकाश-स्थान ।

तेरे नयन का देख के मैखाना^१ आइना
है तुझ निगाहे-मस्त का दीवाना आइना
ऐ शमा, सर बुलन्द तिरा नूर देखकर
सब जौहराँ किये हैं सौ परवाना आइना
साफ़ी^२ अपस की ले के संवारा है शौक सूँ
रखने कूँ तुझ ख़याल का काशाना^३ आइना
जब सूँ पड़ा है अ़क्स तिरा आइने भितर
तब सूँ लिया है शक्ल परीखाना आइना
तुझ साफ़ मुख पे देख के यो ख़ते-जौहराँ^४
ज़ंजीर पग में डाले हैं दीवाना आइना
तेरे नयन की देख के पुतली कूँ ऐ सनम
सर-ता-कदम है सूरते-बुतखाना आइना
मानिन्द उस 'वली' के हुआ मस्तो-बेखबर
तुझनयन सूँ पिया है जो पैमाना आइना



हुआ है जब सूँ वो नूरे-नज़र अ़खियाँ सूँ जुदा
नहीं नज़र में मिरी तब सूँ ग़ैरे-बेखबी
'वली' ख़याल में उस मह^५ जो कुई कि रखे
तू ख़वाब में न दिसे उसकूँ ग़ैरे-महताबी^६

१. मधुशाला २. सौंदर्य ३. मकान, घर ४. जौहरी, पारखी ५.
चाँद ६. चाँदनी बिना।

आया वो शौख बाँध के खंजर कमर सती
 आलम कुँ क़त्ले-आम किया यक नज़र सती
 ताक़त रहे न बात की फिर इन्फ़हाल^१ सूँ
 तशबीह^२ तुझ लबाँ कुँ अगर दूँ शकर सती
 ग़म ने लिया है तब सूँ मुझे पेचो-ताब में
 बाँधा है जब सूँ जीव कुँ उस मू-कमर सती
 ग़म के चमन कुँ बादे-खिज़ाँ^३ का नहीं है खौफ
 पहुँचा है उस कुँ आब मिरी चश्मे-तर सती
 यक बार जाके देख 'वली' उस दरस के तई
 लिखता हूँ जिसके वस्फ़^४ कुँ आबे-गुहर^५ सती



उस सूँ रखता हूँ ख़याले-दोस्ती
 जिसके चेहरे पर है ख़ाले-दोस्ती^६
 खुश्क लब वो क्यों रहे आलम मने
 जिस कुँ हासिल है जलाले-दोस्ती^७
 शमा-ए-बज़म अहले-मअ़नी^८ क्यों न हुए
 जिस ऊपर रोशन है हाले-दोस्ती
 इस सुखन सूँ आशना है दर्द मन्द
 दर्द दूरी है ब-बाले^९ -दोस्ती
 ऐ सजन तुझ मुख की मसहफ़^{१०} में मुझे
 देखना बरजा है फ़ाले - दोस्ती

१. शर्मिन्दगी
२. उपमा
३. शिषिर-वात
४. प्रशंसा
५. मोतियों के पानी, चमक से
६. दोस्ती का नक्श
७. दोस्ती का जलाल, प्रकाश, हक
८. दुनियावी अर्थ
९. झंझट
१०. किताब।

फैज़ सूँ तुझ क़द के ऐ रंगी बहार
 ताज़ा - ओ - तर है निहाले - दोस्ती
 ऐ 'बली' हर आन कर मशक्के-वफ़ा^१
 है वफ़ादारी कमाले-दोस्ती



जू कुई हर रंग में अपने कूँशामिल कर नहीं गिनते
 हमन सब आकिलाँ^२ में उसकूँ आकिल कर नहीं गिनते
 मदरस-मदरसे^३ में गर न दबोले दरस दर्शन का
 तो उसकूँ आशकाँ उस्ताद क़ामिल कर नहीं गिनते
 ख्याले-खाम कूँ जु कुई कि धोवे सफ़-ए-दिल सूँ
 तासुफ़^४ के मुतालिब^५ कूँ वो मुश्किल कर नहीं गिनते
 जो बिस्मिल^६ नहिं हुआ तेरी नयन के तेग़ सूँ बिस्मिल
 शहीदाँ जग के उस बिस्मिल कूँ बिस्मिल कर नहीं गिनते
 परत^७ के पन्थ में जु कुई सफर करते हैं रात होर दिन
 वो दुनिया कूँ बग़ैर अज़ जाहे-बाबल कर^८ नहीं गिनते
 नहीं जिस दिल में पी की याद की गर्मी की बेताबी
 तो वैसे दिल कूँ सारे दिलबराँ दिल कर नहीं गिनते
 रहे महरूम तेरी ज़ुल्फ़ के महरे सूँ वो दायम
 जु कुई तेरी नयन कूँ ज़हरे-क़ातिल कर नहीं गिनते

१. वफ़ा का अभ्यास २. अक्लमन्द ३. मास्टर स्कूल में ४. ज्ञान-
 ध्यान ५. इच्छुक ६. दुःखी ७. प्रीत ८. एक पुराना नगर।

न पावे वो दुनिया में लज्जते-दीवानगी हर्गिज़
जो तुझ जुल्फँ के हल्के कूँ सलासल^१ कर नहीं गिनते
बगैर अज मारफ़त^२ सब बात में गर कुई अछे कामिल^३
'वली' सब अहले-अरफँ^४ उसकूँ कामिल कर नहीं गिनते



'वली' राहे-मुहब्बत में वफादारी मुकद्दम^५ है
वफ़ा नहिं जिसमें उसकूँ अहले-ईमा कर नहीं गिनते



सजन ! तुझ बिन हमन गुलशन कूँ गुलशन कर नहीं गिनते
बज़ज़ तेरे महे-रोशन^६ कूँ रोशन कर नहीं गिनते
सिकन्दर क्यों न जावे बहरे-हैरत में कि मुश्ताकँ^७
तुम्हारे मुख अगे दरपन कूँ दरपन कर नहीं गिनते
नहीं तेरे रक्कीबाँ सूँ अदावत दिल में हमना के
मुरब्बते - दोस्ताँ दुश्मन कूँ दुश्मन कर नहीं गिनते
अगर अंभुवाँ के गौहर सूँ मकमल नहीं हुआ दामन
मुहब्बते-मशरब^८ उस दामन कूँ दामन कर नहीं गिनते
'वली' दिल में हमारे हासदाँ^९ का खौफ नहीं हर्गिज़
बज़ज़ वज़वे^{१०} किसी रहज़न कूँ रहज़न^{११} कर नहीं गिनते

१. सिलसिलेवार २. सूफ़ीवाद की अन्तिम मिलन अवस्था ३. योग्य

४. पहचानने वाले ५. मवसद, आवश्यक ६. प्रकाशित, उदित चाँद

७. इच्छुक ८. मुहब्बत करने वाले ९. जलने वाले १०. एक प्रकार का

चोर, यहाँ माशूक ११. चोर, लुटेरा ।

यह मिरा रोना कि तेरी है हँसी
 आप-बस नहीं, पर बसी है पर बसी
 है कुल आलम में करम मेरे ऊपर
 जज्जरसी^१ है जज्जरसी है जज्जरसी
 रात-दिन जग में रफ़ीके - बेकसाँ^२
 बेकसी है बेकसी है बेकसी
 सुस्त होना इश्क़ में तेरे सनम !
 नाकसी है नाकसी है नाकसी^३
 बायसे रुस्वाई-ए-आलम^४ 'वली'
 मुफ़्लसी है मुफ़्लसी है मुफ़्लसी



क्यों न आवे नशा-ए-गम सूँ दिमाग़े-आशिकी
 बादा-ए-हैरत^५ सूँ है लबरेज़ अयाग़े-आशिकी^६
 अश्क़ खूँ-आलूद^७ हैं सामाने-तख़राए-नियाज^८
 मेहर फ़रमाने-वफ़ादारी है दाग़े-आशिकी
 आब सूँ दरिया के हर्गिज़ काम नहिं उश्शाक़ कूँ
 गर ये हसरत सूँ है सरसब्ज़ बाग़े-आशिकी
 गर तलब है तुझ कूँ राज़खाना-ए-दिल^९ हो अयाँ
 आह की आतिश सूँ रोशन कर चिराग़े-आशिकी
 दर्दमंदाँ बाग़ में हर्गिज़ न जावें ऐ 'वली'
 गर न देवे नाला-ए-बुलबुल^{१०} सुराग़े-आशिकी

१. घटा-सी २. लाचार साथी ३. घटियापन, छोटापन ४. संसार की रुस्वाई (शिकायत) का कारण ५. आश्चर्य की शराब ६. आशिकी का प्याला ७. खून से भरे ८. बादल का तोका ९. दिल का भेद १०. बुलबुल का रोना।

तुझ मुख की आब^१ देख गई आब आब^२ की
यह ताब देख अळ्कल गई आफताब की
तुझ हुस्न के दरिया का सुना जोश जब सती
पुरनम हैं अश्त्याक^३ सूँ अँखियाँ हुबाब^४ की
जग तुझ लबाँ के देख तबसम कूँ सुध सटा
ज़ंजीर पाए - अळ्कल है मौज उस शराब की
देखा हूँ जब सूँ ख़वाब में वो चश्मे-नीम ख़वाब^५
सूरत ख़यालो - ख़वाब^६ हुई मुझ कूँ ख़वाब की
मेरे सुख्न में फ़िक्र सूँ कर ऐ 'वली' निगाह
हर बैत मुझ ग़ज़ल मने है इन्तख़ाब^७ की



जिसकूँ लज़्जत है सजन के दीद की
उसकूँ खुश वक्ती है रोज़े-ईद की
दिल मिरा मोती हो तुझ बाली में जा
कान में कहता है वाताँ भेद की
जुल्फ़ नहिं तुझ मुख पर ऐ दरियाए-हुस्न
मौज है यह चश्मा-ए-खुर्शीद की
उसके ख़ते-ख़ाल सूँ पूछो ख़वर
बूझता हिन्दू है बाताँ बेद की
तुझ दहन कूँ देखकर बोला 'वली'
ये कली है गुलशने-उम्मीद की

१. चमक, सुन्दरता २. पानी, सुन्दरता ३. शौक ४. बुलबुला
५. अधजगी आँखें ६. स्वप्नवत् ७. चुना हुआ।

देख दस्तारे-बसन्ती साकी-ए-सरशार^१ की
 खुल गई हैं आज अँखियाँ नर्गिसे-बीमार की
 बात रह जायेगी क़ासिद^२ वक्त रहने का नहीं
 दिल तड़पता है शताबी ला खबर दिलदार की
 बात कहने का कभी जो वक्त पाता है ग़रीब
 भूल जाता है वो सब कुछ देख सूरत यार की
 मुहरके^३ में इश्क के हर बु-अल्हवस^४ का काम क्या
 देख हालत क्या हुई मंसूर सूँ सरदार की
 ऐ 'वली' उस बेवफ़ा की मेहरबानी पर न भूल
 दिल का दुश्मन है मगर करता है बातें प्यार की



परेशाँ आशकाँ के दिल फ़िदा है तुझ सितमगर के
 बला गरदाँ हैं ज्यूँ जौहर नमन तुझ तेग़ो-खंजर के
 दिया है हक्क ने इस दुनिया में जन्नत के क़सर^५ उनको
 बजानो-दिल जु कुई मुश्ताक़ हैं तुझ हूरे-पैकर के
 तिरे इस हुस्न आलमगीर कूँ खैंचे अपस बर में
 मगर रखती है क्या ये आरसी तालह^६ सिकन्दर के
 अगर चाहूँ लिखूँ तुझ लाल के औसाफ़े-रंगी^७ कूँ
 रगे-याकूत से अब्बल बनाऊँ तारे-मस्तर^८ के
 'वली' तेरे सुखन याकूत सूँ रंगीं हुए लेकिन
 खरीदाराँ जहाँ भीतर कहाँ हैं आज गौहर के

१. प्रसन्न साकी की बासन्ती पोशाक २. पत्रवाहक, सन्देशवाहक

३. हरकत देने वाले ४. अधिक हवस वाला ५. कमी ६. आज्ञाकारी
 ७. रंगीन प्रशंसा ८. तार ठीक करने का यन्त्र ।

उसकूँ हासिल क्यूँ के होवे जग में फरागे-जिन्दगी^१
गदिशे-अफलाक^२ है जिसकूँ अयागे-जिन्दगी^३
ऐ अजीजाँ ! सैरे-गुलशन है गुले-दागे-अलम^४
सोहबते-अहजाब^५ है मअनी में बागे-जिन्दगी
लब हैं तेरे फी-अलहकीकत चश्म-ए-आबे हयात
खिज्रे-खत ने उस सूँ पाया है सुरागे-जिन्दगी
जब सूँ देखा नहिं नज़र भर काकले-मुशकीने-यार^६
तब सूँ ज्यूँ सम्बल^७ परेशाँ है दिमागे-जिन्दगी
आस्माँ मेरी नज़र में कल्व-ए-तारीक^८ है
गर न देखूँ तुझकूँ ऐ चश्मो-चिरागे-जिन्दगी
लाला-ए-खूनीं कफन के हाल सूँ जाहिर हुआ
बस्तगी^९ है खाल सूँ खूबाँ के दागे-जिन्दगी
क्यों न होवे ऐ 'वली' रोशन शबे-कद्रे-हयात
है निगाहे-गर्म गुल-रोयाँ^{१०} चिरागे-जिन्दगी



गुनाहाँ के सिया-नामे सूँ क्या ग़म उस परेशाँ कूँ
जिसे ये जुलफ़ दस्त-आवेज़^{११} है रोज़े-क्यामत में



कश्ती पर मुझ नयन की अँभवाँ के क़ाफ़िले चढ़
म़क़सूद के हरम कूँ अहराम बँध चले हैं

१. जीवन की फरागदिली २. अभाग ३. जीवन का प्याला
४. दागदार, दाग का आलम ५. पद्दे का साथ ६. यार की सुगन्धित
घुँघराली लटे ७. एक घास ८. अन्धेरे का जिस्म ९. बँधा हुआ १०.
फूल से रोम वाले ११. सन्दर्भ १२. स्थाय में।



गया है खौफ सूँ उड़ लाल का रंग
तिरे याकूते-लब^१ की देख लाली



जिसे इश्क का तीर कारी लगे
उसे ज़िन्दगी क्यों न भारी लगे
न छोड़े मुहब्बत दमे-मर्ग^२ लग
जिसे यार जानी सूँ यारी लगे
न होवे उसे जग में हर्गिज़ क़रार
जिसे इश्क की बेक़रारी लगे
हर इक वक्त मुझ आशिके-पाक कूँ
प्यारे तेरी बात प्यारी लगे
'वली' कूँ कहे तू अगर यक वचन
रक्कीबाँ के दिल में क़ठारी लगे



आजुर्दगी^३ सूँ उसकी मत खौफ कर 'वली' तू
है ऐन मेहरबानी उस मेहरबाँ की गाली

तारीफ़ उस परी की जिसे तुम सुनाओगे
 ता-हश्र^१ उसके होश कूँ उसमें न पाओगे
 जिस वक्त सरकरोगे बयाँ उसकी जुल्फ़ का
 सौदाज़दों^२ पे ग़ाम का सिया-रोज़^३ लाओगे
 जिस वक्त उसके हुस्न कूँ देखोगे बेहिजाब^४
 हैराँ हूँ क्यों के जामे में अपने समाओगे
 तौबा तरफ न देखोगे हर्गिज़ निगाह कर
 गर उसके क़द सूँ जीव को अपने लगाओगे
 दोगे अगर 'वली' कूँ खबर उसके लुत्फ़ की
 आतिश नमन रकीब का सीना जलाओगे



करती है दिल कूँ बेखुद उस दिलरुबा की गाली
 गोया है जामे-हैरत^५ उस खुश अदा की गाली
 किस नाज़ो-किस अदा सूँ आता है ऐ अज़ीज़ा
 है मीरज़ा^६ अदा में उस मीरज़ा की गाली
 मुद्दत के बाद गर्मी दिल की फ़रद^७ हुई है
 शर्वत है हक़ में मेरे उस बेवफ़ा की गाली
 गुलज़ार सूँ वफ़ा के क्यूँ जा सकूँ मैं बाहिर
 करती है बन्द दिल कूँ गुलगूँ कबा की गाली
 ज्यूँ गुल शिगफ़तगी^८ सूँ जामे में नहिं समाता
 जब सूँ सुना 'वली' ने रंगीं अदा की गाली

१. आजीवन २. ग़ामग़ीनों पर ३. काले दिन, दुर्दिन ४. बेपर्दा ५.
 मस्ती का प्याला ६. मुगलों जैसी रोबीली अदा ७. समाप्त ८. खिलने
 पर।

तिरे होटाँ की लाली सूँ मुहाली
 छिपी हाथों में जा मेहँदी की लाली
 तिरा कद देख तुझ पाओं पे झुक-झुक
 पड़े शमशाद की डाली पे डाली
 बयाँ तुझ जुल्फ़ की स्याही का कहूँ क्या
 कि नहीं है मशल उसके रात काली
 तिरी शमशीरे-अबरू देख ज़ालिम
 लिया शेरों ने जा कोहों^१ की जाली
 खुमारी देख तुझ अँखियों की बे-कैफ़^२
 हुई टुकड़े शराबे-पुर्तगाली
 तिरे मुख का दीवाना हो चमन में
 गया है भूल चम्पा फूल माली
 'वली' पाओं सीं उसके कुछ अजब नहिं
 अगच्चे कर उठे शब नक्शे-काली



तिरे मुख के गुलिस्ताँ की अगर हूराँ में शोहरत हो
 तो हर इक मस्त होकर छोड़ गुलजारे-अरम निकले



आगोश में आने की कहाँ ताब है उसकूँ
 करती है निगह जिस कदे-नाजुक पे गिरानी

अगर गुलशन^१ तरफ वो नौ-खते-रंगीं अदा^२ निकले
 गुलो-रीहाँ^३ सूँ रंगो-वू शिताबी पेशवा निकले
 खिले हर गुँच-ए-दिल ज्यूँ गुले-शादाव-शादी^४ सूँ
 अगर टुक घर सूँ बाहिर वो बहारे-दिलकशा^५ निकले
 गनीमे-गम^६ किया है फौज बन्दी इश्क़बाज़ाँ पर
 बजा है आज वो राजा अगर नौवत वजा निकले
 निसार उसके क़दम ऊपर करूँ अंभुवाँ के गौहर सब
 अगर करने कूँ दिलजोई वो सर्वे-खुश अदा निकले
 सनम आए करूँगा नाला-ए-जाँसोज़^७ कूँ ज़ाहिर
 मगर उस संगे-दिल सूँ मेहरवानी की सदा निकले
 रहे मानिन्द लाले-बेबहाँ शाहाँ के ताज ऊपर
 मुहब्बत में जूँ कुई असबावे-ज़ाहिर कूँ बहा निकले
 बख्तीली^८ दरस की हर्गिज़ न कीजो ऐ परी-पैकर
 'वली' तेरी गली में जब कि मानिन्दे-गदा निकले

१. बगीचा २. काले तिल तथा सुन्दर हाव-भाव वाला ३. रीह
 के फूलों से ४. प्रसन्नता से प्रसन्न ५. बहार-सा दिलकश ६. गम़ीन
 ७. जानलेवा आँसू, रोना ८. कंजूसी।

छोड़ ऐ शौख तर्ज़े-खुद कामी^१
 मत हो हर दीदा-ए-बाज़ का दामी^२
 ऐ 'बली' गैर इश्क़ हरफ़ दीगर
 पुरुता मगज़ाँ^३ के नज़द है खामी



तिरी अँखियाँ कँ देखे दिल है आहुए-वियाबानी^४
 तिरी जुल्फ़ाँ सूँ जी है वस्त-ए-दामे परेशानी^५
 हुआ है दिल हर इक अ़ाशिक़ का नाला मशल बुलबुल के
 तिरे मुख ने किया है जब सूँ जग भीतर गुलिस्तानी
 हुआ याकूत रंगीं देख तेरे लाले-रंगीं कँ
 हुआ सर-सब्ज जो तुझ खत में देखा रंगे-रीहानी^६
 सजन तेरी गुलामी में किया हूँ सल्तनत हासिल
 मुझे तेरी गली की खाक है तख्ते-सुलेमानी
 'बली' कँ गर तिरे नज़दीक कुई देखे तो यूँ बूझे
 लगी है सफ़-ए-हस्ती ऊपर तस्वीरे-हैरानी



ऐ पतंग जलके तुझ मुए पीछे
 शमा सावित कदम है जलने में

१. अभिव्यक्ति का ढंग
२. देखने वाले के बंधन में
३. परिपक्व बुद्धि वाले
४. वियाबान-सा अँधेरा, सूना, भयावह
५. परेशानी का बन्धन
६. फूलों का रंग।

तिरा लब देख हैवाँ^१ याद आवे
 तिरा मुख देख कुन्हाँ^२ याद आवे
 तिरे दो नयन देखूँ जब नज़र भर
 मुझे तब नगिस्ताँ याद आवे
 तिरी जुलफ़ाँ की तूलानी^३ कूँ देखे
 मुझे लैले-जमस्ताँ^४ याद आवे
 तिरे खत का ज़मर्दे-रंग^५ देखे
 बहारे - सम्बुलिस्ताँ^६ याद आवे
 तिरे मुख के चमत के देखने कूँ
 मुझे फिरदौसे-रिज़वाँ^७ याद आवे
 तिरी जुलफ़ाँ में यो मुख जो कि देखे
 उसे शमा-ए-शविस्ताँ याद आवे
 जु कुई देखे मिरी अँखियाँ कूँ रोते
 उसे अब्रे-वहाराँ^८ याद आवे
 जो मेरे हाल की गदिश कूँ देखे
 उसे गदवि-गरदाँ^९ याद आवे
 'वली' मेरा जुनूँ जो कुई कि देखे
 उसे कोहो-बियाबाँ^{१०} याद आवे

१. ऊँट, यहाँ पतले सुख्ख होंठ २. माहीयत, चाँदनी ३. लम्बाई
४. काला सुर्मा ५. तिल का चमकता काला रंग ६. एक बेल ७. स्वर्ग के बगीचे ८. वर्षा कृतु ९. भिखारियों की बुरी दशा १०. सूने पहाड़।

उस वक्त मिरे जीव का मक्सूद वर आवे
जिस वक्त मेरे वर-मनें वो सीमबर^१ आवे
अँखियाँ की करुँ मसनद ओ पुतली का करुँ बालिश^२
वो नूरे-नज़र आज अगर मेरे घर आवे
उस वक्त मिरे बख्त की ज़ाहिर हो बुलन्दी
जिस वक्त वो खुश - कामते - आली^३ नज़र आवे
जामे मनें गुँचे नमन रह न सकूँ मैं
गर पी की खबर लेके नसीमे - सहर^४ आवे
गर उस महे - दिलजू^५ का गुज़र मेरी तरफ हो
दिल के शजरे-खुशक^६ कूँ फिर वर्गो-वर^७ आवे
उस वक्त मुझे दावा-ए-तस्कीर^८ वजा है
जिस वक्त मेरे हुक्म में वो अश्व गर^९ आवे
तुझ चश्म सिया-मस्त के देखे सती ज़ाहिद
तुझ जुल्फ के कूचे मनें ईमाँ बिसर आवे
तुझ लब की अगर याद में तस्नीफ़^{१०} करुँ शेर
हर शेर मनें लज़्जते - शहदो - शकर आवे
जिस आन 'वली' वसफ़^{११} करुँ पी के वतन का
हर शेर मेरा गैरते सिल्के - गुहर^{१२} आवे

१. चाँदी-सा चमकता, सुन्दर २. तकिया ३. महान् खुशी देने वाला
४. प्रात-समीरण ५. चाँद से सुन्दर प्रिय ६. सूखा मुँह ७. बिजली की
चमक ८. बेगार का दावा ९. नाजुक भाव वाला १०. रचूँ ११. प्रशंसा
१२. सुनहला मोती ।

सर्हरे-ऐश^१ गावें हम अगर वो इश्वर साज़^२ आवे
 बजा दें तब्ले-शादी के अगर वो दिल नवाज़ आवे
 खुमारे-हिज्ब ने जिसके दिया है दर्दे-सर मुझ कूँ
 रखूँ नशा नमन अँखियाँ में गरवो मस्ते-नाज़ आवे
 जनूने-इश्क^३ में मुझ कूँ नहीं ज़ंजीर की हाजत
 अगर मेरी खबर लेने कूँ वो जुलफे-दराज़^४ आवे
 अदब के अहतमाम^५ आगे न पावे बारहाँ^६ हर्गिज़
 तिरे साए की पा-वोसी^७ कूँ गर रंगे-अयाज़^८ आवे
 अजब नहिं गर गुलाँ दौड़े पकड़ कर सूरते-कमरी^९
 अदा सूँ जब चमन भीतर वो सर्वे-सरफराज़^{१०} आवे
 पुरस्तश उसकी मेरे सरपे होवे सर सती लाज़िम
 सनम मेरा रकीबाँ के अगर मिलने सूँ बाज़ आवे
 'वली' उस गौहरे-काने-हया^{११} की क्या कहूँ खूबी
 मेरे घर इस तरह आता है ज्यूँ सीने में राज़ आवे



दरिया सती निस्वत है वजा तबीह को मेरी
 इस मर्तवा अम्वाजे-मुख़न की है रवानी

१. मस्ती में
२. नाजुक हाव-भाव वाला
३. प्रेम का उन्माद
४. लम्बी लटों वाला
५. कोशिश
६. अनेक बार
७. पाँवों चूमने
८. खुश-रंग
९. चाँद की सूरत, कमर पकड़कर
१०. सर्व से भी बढ़कर लम्बा-ऊँचा, सुन्दर
११. मोतियों की खान को शर्मनि वाला, सुन्दर प्रिय।

फलातूँ हूँ ज़माने का सजन जब मुझ गली आवे
 न बूझूँ तिफ्ले-मक्तव^१ कर अगर वाँ बूअली^२ आवे
 सरुरे-इश्क़ मुझ दिल में लबालब है अजब मत कर
 अगर मुझ आह की नै^३ सूँ सदाए-वाँसली^४ आवे
 तमाशा देखने तेरे दहन का ऐ गुलिस्ताँ-रु
 गरेवाँ चाक होकर हर चमन सूँ हर कली आवे
 करूँ क्या ऐ सजन, तुझ पर मिरा अफ़सूँ^५ नहीं चलता
 वगरना इक इशारत में परी मुझ घर चली आवे
 ग़रुरे-हुस्न ने तुझकूँ किया है इस क़दर सरकश
 कि ख़ातिर में न लावे तू अगर तुझ घर 'वली' आवे



यक बार गर चमन में वो नौ-वहार जावे
 बुलबुल के दिल सूँ गुल का सब ऐतबार जावे
 आवे अगर करम सूँ मानिन्द अब्रे-रहमत^६
 देखे सूँ आव उसकी दिल का गुबार जावे
 चंचल की बात लावे तूती अगर ज़बाँ पर
 अलबत्ता आरसी के दिल सूँ गुबार जावे
 जाती है हासदाँ के यूँ दिल में बेत मेरी
 सीने में दुश्मनों के ज्यूँ जु-अलफ़कार^७ जावे
 मस्ती ने तुझ नयन की बेखुद किया 'वली' कूँ
 आवे जो वज्मे-मै^८ में क्यूँ होशियार जावे

१. स्कूली बालक २. खुदा की भनक ३. अलामत ४. वाँसुरी की
 आवाज़ ५. बस ६. दया के बादल ७. प्रकाश ८. शराब पीने का स्थान,
 मधुशाला।

अगर वो रश्के-गुलजारे-अरम^१ गुलशन तरफ जावे
 अजब नहिं बाग में माली किये पर अपने पछतावे
 कहाँ है ताब मानी कूँ कहाँ वहजाद^२ कूँ ताकृत
 कि तेरी नाज़ की तस्वीर तुझ कूँ लिख के दिखलावे
 कहाँ है आज यारब जल्व-ए-मस्ताना-ए-साकी^३
 कि दिल सूँ ताब, जी सूँ सब्र, सर सूँ होश ले जावे
 किया है जिसकी जुल्फँ ने हमारे दिल कूँ सरगरदाँ^४
 नहीं कुइ उस हटीले कूँ हमारी वात समझावे
 करे हर जुल्फ़ कूँ जंजीर कर कर शाना-आवेजी^५
 अगर इन्साफ़ कूँ वो नाज़नी टुक काम फरमावे
 'वली' अरबावे-मअरनी^६ में उसे है अर्श का रुतबा
 परी जादे-मुग्रानी कूँ जू कुइ कुर्सी प विठलावे



है हुस्न तिरा हमेशा यकसाँ
 जन्नत सूँ वहार क्यों कि जावे
 मुमकिन नहीं अब 'वली' का जाना
 है आशिके-जार क्यों कि जावे

१. स्वर्ग का फूल, बहुत सुन्दर २. ढूण्डने वाला ३. साकी की मस्ती
 के दृश्य ४. परेशान ५. कन्धे पर ६. ईश्वर की दृष्टि में।

चमन में जल्वागर जब वो गुले-रंगी-अदा होवे
खजाने - खातिरे-आशिक् बहारे - मुद्रा होवे
हुआ हूँ जर्दो-लागर^१ काह^२ की मानिन्द तुझ ग्राम में
बजा है गर कशिश तेरी भवाँ की कहरबा^३ होवे
बरंगे-गर्दो-बाद उसकूँ करे आलम में सरकरदाँ
जिसे इश्के - बला अंगोजे - खूबाँ रहनुमा होवे
न छोड़े रास्ती रोशन दिलाँ सुवहे-क्यामत तक
अगर ज्यूँ शमा हर-हर आन तनसूँ सरजुदा होवे
अपस के कावा-ए-मक्सद^४ कूँ बे सही सफर पहुँचूँ
ख्याल उसका अगर कश्ती में दिल की नाखुदा^५ होवे
चमन में दिल के जब गुजरे ख्याल उस सर्व कामत का
सरापा आह सर्दे - सीना सर्दे - खुश अदा होवे
पढ़े गर फ़ातिहा^६ ज़ालिम लबे-जाँबर्खा सूँ अपने
शहादत गाह-ए-आशिक् चश्म-ए-आबे-बका होवे
न होवे यक सुवह नाने-गर्म सूरज सूँ उसे सैरी
तुम्हारे दरस की नहमत^७ की जिसकूँ इश्तहा^८ होवे
जुदा उस गौहरे-यकता सूँ होना सख्त मुश्किल है
अगर यक आन हम दरिया दिलाँ सूँ आशना होवे
'वली' मुश्किल नहीं हर्गिज़ पहुँचना आबे-हैवाँ कूँ
अगर खिज्जे खते-खूबाँ हमारा रहनुमा होवे

१. दुबला २. तिनका ३. उत्पीड़क ४. मंज़िले-मक्सूद ५. नाविक

६. मौत के बाद शान्ति-गीत ७. खुदाई देन, कृपा ८. भूख, इच्छा ।

शबनम में ग़र्क होवे शर्मिन्दगी सूं हर गुल
वो गुल बदन चमन में जब बेहिजाब^१ होवे



अगर मोहन करम सूं मुझ तरफ आवे तो क्या होवे
अदा सूं उस कदे-नाजुक कूं दिखलावे तो क्या होवे
मुझे उस शोख के मिलने का दायम शौक है दिल में
अगर यक बार मुझ सूं आके मिल जाये तो क्या होवे
रकीवाँ के न मिलने में निहायत उसकी ख़ूबी है
अगर दानिश^२ कूं अपनी काम फरमाए तो क्या होवे
पिया के क़न्दे-लब ऊपर किया है हठ मिरे दिल ने
मुहब्बत सूं अगर टुक उसकूं समझावे तो क्या होवे
'वली' कहता हूँ उस मोहन सूं हर इक वात पर्दे में
अगर मेरे सुखन के मरज कूं पाए तो क्या होवे



क्यों कर रहे अजीज़ीज़ी तारीकि-ए-शबे-ग़म^३
वो रश्के-माहे-अनवर^४ जब बेहिजाब होवे
हर-हर निगह सूं अपनी बेखुद करे 'वली' कूं
वो चश्मे-मस्त सर खुश जब नीम ख़्वाब होवे

१. बेपर्दा २. अक्ल ३. ग़म की काली रात ४. प्रकाशवान चाँद
भी जिससे ईर्षा करता है।

मारा है इन्तज़ार ने मुझ कूँ वले हनूज़
 उस बेवफ़ा कूँ दिल की हक्कीकत नहीं लिखी
 डरता हूँ सादगी सती मोहन की ऐ 'वली'
 इस खौफ़ सूँ रकीब की ग़लीयत^१ नहीं लिखी



अगर मुझ कन तू ऐ रश्के-चमन^२ होवे तो क्या होवे
 निगह मेरी कातेरा मुख चमन होवे तो क्या होवे
 सिया-रोज़ा^३ के मातम की सियाही दफ़ा करने कूँ
 अगर यक निस तू शमा-ए-अंजुमन^४ होवे तो क्या होवे
 तिरी बातों के सुनने का हमेशा शौक़ है दिल में
 अगर यक दम तू मुझ सूँ हम सुखन^५ होवे तो क्या होवे
 मुझा जो शौक़ में तुझ देखने के ऐ हिलाल-अबरू^६
 उसे अँखियाँ के पद्दे का कफ़न होवे तो क्या होवे
 'वली' गुँचा नमन इक रात उस हस्ती के गुलशन में
 अगर मुझ वर में वो गुल पैरहन होवे तो क्या होवे



क्यों बेखुदी न आवे उस वक्त पर 'वली' कूँ
 वो सर्व-नाज़-पैकर जब नीम रुवाब होवे

१. शिकायत, बुराई २. बाग भी जिस पर ईर्षा करे, विकसित
 ३. काले दिन, बुरे दिन ४. महफ़िल की शोभा ५. बातचीत करना
 ६. दूज के चाँद-सी टेढ़ी भँवें।

वो मुहब्बत में तिरी फ़ानी^१ हुए
रोज़ो-शब जो महवे-हैरानी^२ हुए
देख तुझ अबरू की जौहरदार तेग
जौहरा^३ तलवार के पानी हुए
तुझ नयन के खंजरा^४ पर कर नजर
दीदाबाजाँ-चश्म^५ कुर्वनी हुए
ऐ सजन तेरी परत^६ के दोस्त के
दोस्ताँ कई दुश्मने-जानी हुए
जब सूँ तू खाया है पान ऐ आफ़ताब^७
तेरे लाले-लव बदखशानी^८ हुए
तुझ दहन कल-अदम की याद सूँ
वाट में उश्शाक कई फ़ानी हुए
तुझ दसन^९ की देख खूबी गौहरा^{१०}
ग़र्के - दरियाए - पशोमानी^{११} हुए
तुझ कूँ जो देखे यहाँ ऐ सुवहरू
ज्यूँ सुरज, दिल उनके नूरानी^{१२} हुए
इश्क़ में उस रश्के-लैला के 'वली'
मशल मजनूँ के वियावानी^{१३} हुए

१. तबाह
२. दीवाने
३. देखने वालों की आँख
४. प्रीति
५. सूर्य
६. बदखशाँ के निवासियों जैसे कोमल, सुर्ख
७. अनुपस्थिति
८. लज्जित होना, डूब मरना
९. प्रकाशवान
१०. जंगलवासी ।

क्या हुआ गर अकल दूरन्देश की सुनता हूँ बात
होश सूँ खोवेगा आखिर वो लबे-मै गूँ^१ मुझे



क्यों न हासिल हो रमे-आहू^२ मुझे
उसकी अँखियाँ ने किया जादू मुझे
रात आने कहके फिर आया नहीं
पेच देता है वो मुश्की-मू^३ मुझे
ऐ अजीज़ी ज़ाँ क्या करूँ इखलास^४ की
पहुँचती नहीं गुल बदन सूँ बू मुझे
क्योंकि बैठूँ गोशा-ए-आराम^५ में
खैंचता है वो कमाँ-अबरू मुझे
बुलबुले-नालाँ^६ हुआ हूँ दर्द सूँ
जब नज़र आया है वो गुलरू मुझे
शोखी-ए-चश्मे - परी का दंग^७
हैरते-अफ़ज़ा^८ है रमे-आहू मुझे
ज़हन में वस्ता है वो खुशीदरू
गमिए-ग्राम सूँ हुई है खूँ मुझे
ऐ 'वली' है जग में महराबे-दुआ^९
किब्ला-रू का हर खमे-अबरू मुझे

१. शराबी होंठ २. भागता हिरन, यहाँ अस्थिरता, चंचलता

३. सुगन्धित केशों वाला ४. दोस्ती, हमदर्दी ५. आरामदायक बग़ल,
कोना ६. बुलबुल के समान रोने वाला ७. आश्चर्यदायक ८. लगाव,
आदत ९. दुआ की आह।

क्यों न होवे आह मेरी हमसरे सर्वे-बुलन्द^१
याद आता है अजीज़ी वो क़दे-मोजूँ^२ मुझे



तुझे निगाहे-मस्त सूँ हासिल है मदहोशी मुझे
तुझे लबे-खामोश ने बख्शी है खामोशी मुझे
गैर सूँ खाली किया हूँ दिल कूँ अपने ज्यूँ हिजाब^३
तुझे निगह ने जब सूँ बख्शी खाना बर दोषी मुझे
जाम में रोशन है जम^४ की सलतनत का सब हिसाब
ऐश सुल्तानी का है फैजे-कदा-नोशी^५ मुझे
तुझे कमर की ताब पर ताकत रबाई खत्म है
इस नज़ाकत ने दिया मेले-हम-आगोशी^६ मुझे
ऐ 'वली' अज़बस कि उसकी याद में है महवे-दिल^७
गैर के खतरे सूँ निसदिन है फरामोशी मुझे



दिल जाम हक्कीकत सती जो मस्त हुआ
हर मस्त मजाजी सूँ ज़बरदस्त हुआ
ये बाग दिसा नज़र में तिनके सूँ कम
और अर्श-अज़ीम पग-तले पस्त हुआ

१. सर्व सी ऊँची २. उपयुक्त कद वाला, प्रिय ३. पर्दा ४. बहिश्त
की नदी ५. शराब पीना ६. गोद में लेना ७. मस्त दिल।

तिरे मुख के सफे पर ख़त लिखा कुदरत के क्रातिब ने
ताज्जुब में हैं सब ख़त्तात इस तहरीर^१ के देखे



कमर उस दिलरुबा की दिलरुबा है
निगह उस खुशबूदा की खुशबूदा है
सजन के हुस्न कूँटुक फ़िक्र सूँ देख
कि ये आइन-ए-मअर्नी नुमा^२ है
ब-ख़त है जो हर आइन-ए-राज
उसे मश्के-ख़तन^३ कहना बजा है
हुआ मालूम तुझ जुल्फ़ाँ सूँ ऐ शौख
कि शाहे-हुस्न पर ज़ुल बहा^४ है
न होवे कोहकन^५ क्यों आहे-आंशिक
जो वो शीरीं अदा कल-गों-कबा है^६
न पूछो आहो-ज्ञारी की हक्कीकत
अज्जीजाँ आंशिकी का मुक्तज्ञा^७ है
'बली' कूँ मत मलामत^८ कर ऐ वाइज़^९
मलामत आंशिको पर कब रवा है

१. लेख २. प्रगट, समान ३. काला दाग, तिल ४. छापा, नमूना
५. पहाड़ ६. पतली कमर वाला गुलाम है ७. तकाज्ञा ८. दोष देना ९.
उपदेशक।

निगह की तेज़ ले वो ज़ालिमें-खूंखार आता है
जगत के खूबरुआँ^१ का सिपहसालार^२ आता है
हर इक दीदे कूँ हुक्मे-आरसी है उसके जल्वे सूँ
जदहाँ वो हैरतअफ़ज़ा^३ जानिबे-बाज़ार आता है
सुरज कूँ बूझता है सुबह के ताराँ सूँ भी कमतर
नज़र में मेरी जब वो यार महे-रुख़सार^४ आता है
सनोबर के दिल ऊपर क्यूँ न हो क़ायम क़्यामत तब
अदा सूँ जब चमन भीतर वो खुश रफ़तार आता है
शाले-शमा^५ करता है सिने की अंजुमन रोशन
'वली' जिस शब कूँ मुझ दिल में ख़याले-यार आता है



बीमारी-ए-आशिक़ है तुझ अँखियाँ सती लेकिन
सदशुक्र कि तुझ लव मने हर दुख की दवा है
मुझ हाल पर ऐ बू-अली-ए-वक़त नज़र कर
तुझ चश्म में बूझा है कि कानूने-शफ़ा है



दमे-जाँबख़ नौख़ताँ मुझकूँ
चश्म-ए-ख़िज़र है मसीहा है

१. मुन्दरों २. सेनापति ३. आश्चर्यप्रद ४. उजले गाल वाला
५. शमा के समान।

यक दीद^१ का वादा दिया तूं अपनी रज़ा^२ सूं
राज़ी हूँ मैं उस पर कि तिरी जिसमें रज़ा है



मग्ज^३ उसका सुबास होता है
गुलबदन के जु पास होता है
आ शिताबी नहीं तो जाता है
क्या करूँ जी उदास होता है
क्यों के कपडे रंगूँ मैं तुझ गम में
आशिकी में लिबास होता है
तुझ जुदाई में नहीं अकेला मैं
दर्दो-गम आस-पास होता है
ऐ 'बली' दिल दिया के मिलने कूँ
जी में मेरे हुलास होता है



मू-ब-मू^४ उसकूँ है परेशानी
जुलफे-मुश्कीं^५ का जिसकूँ सौदा है
ज्यूँ 'बली' रात दिन है महवे-ख़्याल
जिसकूँ तुझ वस्ल की तमन्ना है

न वो बाला^१ न वो बाली,^२ बला है
 मलाए - आशिकँ^३ नाज़ो - अदा है
 तगाफुल शौख का आशिक के हक़ में
 सितम है, जुल्म है, जोरो-जफ़ा है
 कहा मिज़गाँ^४ ने उसकी सोज़ाँ सू
 आशिक पर सितम करना रवा है
 न जावे तुझ कूँ छोड़ ऐ गुलशने-नाज़
 मिरा दिल बुलबुले-बागे-वफ़ा है
 जहे दौलत कि दामे-साया-ए-यार^५
 हमारे सर पे ज्यूँ जुले-हमा^६ है
 मिरा दिल क्यों न जावे उस गली में
 गली उस दिलरुबा की दिलकशाँ^७ है
 हमेशा अन्दलीबे-आशिकी^८ कँ^९ है
 गुले-मक्सद^{१०} तेरा नक्शे-पा^{११} है
 'वली' आते हैं राहे-इश्क में वो
 कि जिनकूँ इस्तकामत^{१२} का अःसा^{१३} है



हक से मग़र होके फिरता है
 है 'वली' वाज़ क्या विचारा है

१. ऊँचा २. पुराना ३. प्रगट, ज़ाहिर ४. पलकें ५. यार की छाया
 का फन्दा ६. पक्षी का साया ७. लुभावनी ८. इश्करूपी बुलबुल
 ९. फूलरूपी लक्ष्य १०. पैरों का निशान ११. सीधापन १२. लकड़ी का
 सहारा ।

जूँ शमा हुआ जो तुझ पे आशिक
वो सर सूँ क़दम तलक जला है



सनम मेरा सुखन सूँ आशना है
मुझे फ़िकरे-सुखन करना बजा है
चमन में वस्ल के हर जल्वे-यार
गुले-रंगीं बहारे-मुद्रा है
न बख्शे क्यूँ तिरा ख़त ज़िदगानी
कि मौजे - चश्म-ए-आबे-बक़ा है
तग़ाफुल ने तिरे ज़ख्मी किया मुझ
तिरी यह कमनिगाही नीमचा^१ है
नहीं वाँ आव-ग़ैरा न आवे-खंजर
शहादतगाह-ए-आशिक कर्बला है
ग़नीमत बूझ मिलने कूँ 'बली' के
निगाहे-पाकबाज़ाँ^२ कीमिया है



आज तुझ गम सूँ है 'बली' गिरियाँ
देख जलपूर का तमाशा है

१. आधीचा २. पवित्रों की।

कमाँ अबरु पे जिव कुर्बा हुआ है
 दिल उसके तीर का पैकाँ^१ हुआ है
 भवाँ तेग-ओ-पलक खंजर निगहे-तीर
 यो किसके कृत्तल का सामाँ हुआ है
 मिरा दिल मुझ सूँ कर-कर बेवफाई
 पसन्दे - खातिरे - खूबाँ^२ हुआ है
 पिया है जाम दिल सूँ बादा-ए-खूँ^३
 जो बज्मे-इश्क में महमाँ हुआ है
 अजीजाँ क्या है परवाने के दिल में
 कि जी देना उसे आसाँ हुआ है
 तावीबाँ^४ का नहीं मुहताज हर्गिज
 जिसे दर्द-बुताँ^५ वरमाँ^६ हुआ है
 बरंगे-गुल फिराके-गुल-रुखाँ में
 गरेबाँ चाक ता-दामाँ हुआ है
 सवादे-खत्ते-खूबाँ दिलकशी में
 बहारे-गुलशने-रीहाँ हुआ है
 'वली' तस्वीर उसकी जिनने देखी
 मशाले आरसी हैराँ हुआ है

१. निशाना
२. सुन्दरों को पसन्द करने वाला
३. लाल शराब
४. चिकित्सक
५. बुतों का दर्द, मानवीय प्रेम
६. सूजन।

इश्क़ नहीं ये हिजबर^१ आया है
 दुश्मने-होशो-सबर आया है
 देख उसकी कलाहे बारानी^२
 चाँद पर आज अब्र^३ आया है
 मुझ सूँ वहशी हैं गुले-नयन गोया
 फौजे-आहू^४ में बबर^५ आया है
 या सनम का है गम जा-ए-बेदीं^६
 या विलायत सूँ गबर^७ आया है
 ऐ 'वली' क्या सबब कि आज सनम
 बरसरे-जोरो-जबर आया है



जो खोल लट कूँचला लटक कर छमक-छमक कर जो मुख दिखाया
 सो लट कूँ देखे 'वली' लटक कर सजन नयन में अटक लिया है



ज़ाहिर हुआ है मुझ पे तिरे नाज़ सूँ सनम
 रंगीं बहारे-हुस्न बाहरे-अताब है
 पोशीदा हाल इश्क़ रहे क्यों के ऐ 'वली'
 ग़माजे यादे-जुल्फ़ो-ख़मो पेचो-ताब है

१. जुल्म २. बरसात से बचाने वाली टोपी ३. बादल ४. हिरनों
 के झुण्ड में ५. शेर बब्र ६. काफिर संकेत ७. अग्निपूजक।

इश्कः में जिसकुँ महारत खूब है
 मशरबे-मजनूँ^१ तरफ मंसूब है
 आशिके-बेताव^२ सूँ तज़ो-वफ़ा^३
 ज्यूँ अदा महवूब की महवूब^४ है
 इश्कः के मुफ़्ती^५ ने यों फ़तवा दिया
 देखना ख़बाँ का दरसे-खूब है
 लखते-दिल^६ पर ख़त लिखा हूँ यार को
 दागे-दिल मुहरे-सरे-मक्तूब^७ है
 ग़मज - ओ - नाज़ो-अदाए-नाज़नी^८
 जुल्म है, तूफान है आशूब^९ है
 लिख दिया यूसुफ गुलामी ख़त तुझे
 गच्चे नूरे-दीदा-ए- याकूब^{१०} है
 हर घड़ी पढ़ता है इशारे-^{११} 'वली'
 जिसकुँ हफ़े-आशिकी मरगूब^{१२} है



कुछ भला नहीं रकीब कुँ लगता
 एक पा-पोश खूब लगती है

१. मजनूँ जसा मिजाज २. व्याकुल प्रेमी ३. वफ़ा का ढंग ४. प्रिय
५. न्यायाधीश ६. दिल का टुकड़ा ७. लिखा पत्र ८. नाजुक हाव-भाव
और इशारे ९. हलचल, घवराहट १०. आँख की याकूब-सी रोशनी
११. वली के शेर १२. पसन्द ।

जिसे अकलीमे-तन्हाई^१ में अन्दाजे-अकामत^२ है
 जबीने-हाल^३ पर उसके सदा रंगे-सलामत है
 गुजर उस सर्व-कामत का हुआ है जबसूँ मस्जिद में
 मुअज्जन^४ की जबाँ ऊपर हमेश लफजे-कामत है
 मुझे रोजे-क्यामत का रहा नहीं खौफ ऐ वाइज
 ख्याले-कामते-रुअना^५ मिरे हक्क में क्यामत है
 हुआ है सूरते-दीवार जाहिद कंजे-खिलवत^६ में
 यही उस हुस्न-हैरत बरुश की जाहिर करामत है
 हुआ है जो जबीं-फरसा तिरी महराबे-अबरू में
 सफे-उश्शाक़ में उसकूँ अमामत है अमामत^७ है
 सिया-बरुती^८ हुई जग में नसीबे-आशिके-बेदिल
 ये तुझ जुलफे-परेशाँ की परेशानी की शामत है
 न हो नासह की सरुती सूँ मकदर ऐ दिले-शैदा^९
 सदा नक्दे-मुहब्बत का महक संगे-मलामत है
 शरफ जाती है तुझ कूँ ए गुले-गुलज़ार माशूकी
 तजल्ली मुख ऊपर तेरे स्यादत^{१०} की अलामत है
 'वली' जो इश्कबाज़ी में हक्कीकत सूँ नहीं वाक़िफ़
 सुखन उसका क्यामत में गुले-बागे मज़हमत है

१. अकेलापन रूपी कठोर भूमि २. ठहरना, क्याम करना ३.
पेशानी पर ४. अज्ञान देने वाला ५. प्रिय के कद का ख्याल ६. एकांत
कोना ७. बादशाही ८. अंधेरा, अभाग्य ९. मस्त मन १०. बुजुर्गी।

सर्व मेरा मेरहर सूँ आजाद है
 शोख है, बेदर्द है, सय्याद है
 हाथ सूँ उस ग़मज़हे-खूँरेज़ के
 दाद है, बेदाद है, फ़रियाद है
 आब होवे क्योंकि दिल उस सर्व का
 सख्त है, बेग़हम है, फौलाद है
 इश्क़ में शीरीं वचन के रात-दिन
 आहे-दिल पर तेशा-ए-फरहाद है
 ग़म नहीं मजनूँ कूँ हर्गिज़ ऐ 'वली'
 खाना-ए-जनज़ीर अगर आवाद है



आस्माँ ऊपर न वूझो चादरे-अब्रे-सफेद^१
 जा न माज़े-ज़ाहिदे-अज़लतनशी^२ वरवाद है
 सर्व की वारस्तगी^३ ऊपर न ज़रकर ऐ 'वली'
 बावजूदे-खुदनुमाई^४ किस कदर आजाद है



दीवाना किया है 'वली' कूँ सदा
 तिरी ज़ुल्फ़ में क्या सजन छन्द है

Digitized by srujanika@gmail.com

१. सफेद बादल रूपी चादर २. आरम्भ से पूर्व, अनादि ३. वास्ता
 ४. आत्म-अभिव्यक्ति।

क्यों न लेवें ज़ाहिदाँ^१ तुझ देख तर्जे बरहमन^२
 रिश्ता-ए-इखलास तेरा रिश्ता-ए-जुन्नार है
 मत न सीहत कर 'वली' कूँ ऐ सुखन ना आशना
 तर्क^३ करना इश्क का दुश्वार है, दुश्वार है



इश्क में सब्रो-रजा^४ दरकार है
 फिक्र असबाबे-वफ़ा^५ दरकार है
 चाक करने जामा-ए-सब्रो-करार
 दिलबरे-रंगी-कबा^६ दरकार है
 हर सनम तस्खीरे-दिल^७ क्यों कर सके
 दिल रुबाई कूँ अदा दरकार है
 जुल्फ कूँ वा^८ कर कि शाहे-इश्क कूँ
 साया-ए-वाले-हिमा^९ दरकार है
 रख कदम मुझ दीदा-ए-खूबार पर
 गर तुझे रंगे-हिना दरकार है
 देख उसकी चश्मे-शहला^{१०} कूँ अगर
 नगिसे-बागे-हया दरकार है
 अज़म^{११} उसके वस्ल का है ऐ 'वली'
 लेकिन इमदादे-खुदा दरकार है

१. धार्मिक
२. ब्राह्मणों जैसा ढंग, आस्तिकता
३. छोड़न
४. सब्र
- और स्वीकृति
५. वफादारी का ढंग
६. रंगीन लिबास प्रिय
७. दिल काबू करना
८. प्रकट
९. सुगंधित केशों की छाया
१०. गहरी तीली आँखें
११. उद्दश्य।

जनूँ के मुल्क के सुलताँ कूँ क्या हाजत है अफ़सर की
बगूला^१ सर उपर मजनूँ के सौ अफ़सर बराबर हैं
जु कुई हासिल किया है दौलते-आली कूँ सौज़श^२ की
फफोला उस दिले-दरिया भीतर गौहर बराबर है



न समझो-खुद-बखुद दिल बेखबर है
निगह में उस परी-रु की असर है
अभूँ लग मुख दिखाया नहिं अपस का
सजन मुझ हाल सूँ क्या बेखबर है
मुहब्बत तर्क मत कर ए परी-रु
मुहब्बत में मुरव्वत मुहतबर है
तिरे कद के तमाशे का हूँ तालिब
कि राहे-रास्तवाज़ी^३ बेखतर है
तिरी तारीफ़ करते हैं मुलामिक^४
सुना तेरी कहाँ हद्दे-बशर^५ है
वयाने अहले - मअनी^६ है पतूल^७
अगज़े हस्वे-जाहिर-मुख्तसर^८ है
'वली' मुझ रंग कूँ देखे नज़र भर
अगर वो दिलरुबा मुश्ताके-जर^९ है

१. बुलबुला २. दुःख-दर्द ३. इश्क की राह ४. औलिया, जानी ५.
रहने का स्थान ६. सांसारिक अर्थ ७. मतलब ८. संक्षिप्त ९. इच्छा के
अधीन ।

न जानूँ खत में तेरे क्या असर है
 कि उस देखे सूँ दिल ज़ेरो-ज़बर^१ है
 इसे बारीक-बीं^२ कहते हैं आशिक
 नज़र में जिसकी वो नाजुक कमर है
 न होवे क्यूँ हजूमे रास्त - बाज़ा^३
 जहाँ उस सर्व-क्रामत का गुज़र है
 हरिक सूँ आशनाँ होना हुनर नहीं
 परी-रुख़सार^४ सूँ मिलना हुनर है
 न पाऊँ तुझ सूँ गर सैवे-जनखदाँ^५
 निहाले - इश्कबाज़ी बेसभर^६ है
 रहेंगे खाक हो तेरी गली में
 वफ़ादारी हमारी इस क़दर है
 'वली' मुझ दिल की आतिश पर नज़र कर
 जहन्नुम की ज़वाँ पर अलहज़र^७ है



क्यों न होवे क़त्ल आशिक दम-बदम
 शोख की बाँकी अदा शमशीर है

१. ऊपर-नीचे, धड़कना २. सूक्ष्मदर्शी ३. प्रेमियों की भीड़ ४.
 अप्सरा ५. तारीफ़ ६. बेकार ७. तौबा।

तिशना-ए-लब^१ कूँ तिशनगी^२ मैं की नहीं नासूर है
पनब-ए-मीना^३ उसे ज्यूँ मरहमे-काफूर है
याद सूँ साकी के निसदिन हर पलक है शाखे-ताक^४
अश्के-हसरत^५ उस उपर ज्यूँ खोशा-ए-अंगूर^६ है
उसका दिल हर्गिज न हो वीराँ अज़ल सूँ ता-अबद^७
याद सूँ दिलदार की जिसका सीना महमूर^८ है
नफ़से-सरकश^९ पर जु कुई पाया है याँ फतह-ओज़फ़र^{१०}
दारे - अक़िबा^{११} मितर अल्हक वही मंसूर है
तुझ तजल्ली के सहोफ़े^{१२} का सुरज है यक वरक
अक्स तेरी जुल्फ़ का जग में शबे-देज़ूर^{१३} है
जो सिपाही होर सफेदी सूँ हुआ है आशना
अहले-बीनश की नज़र में वो सदा मंज़ूर है
जल्द-रू हो इश्क की रह में कि ता पहुँचे नज़ीक
काहिली कूँ सट दे ऐ सालिक कि मंज़िल दूर है
खाकसारी जिसकूँ सुलतानी है इस आलम मने
कासा-ए-खाकी^{१४} उसे ज्यूँ चीनी-ए-फ़ख़फ़ूर^{१५} है
यार के दीदार का तालिब है मूसा हरज़माँ
ऐ 'वली' दरवार उसका उसकूँ कोहे-तूर है

१. होंठों की प्यास २. प्यास ३. शराब की सुराही की सफेद चमक
४. अंगूर की बेल ५. हसरत भरे आँसू ६. अंगूरों का गुच्छा ७. आदि से अन्त ८. भरपूर ९. सरकश की इच्छा १०. विजय ११. कठिन काम करने वालों की सभा, ज्ञानियों की सभा १२. प्याला १३. अंधेरी रात १४. मिट्टी का प्याला १५. चीनी की मिट्टी का प्याला ।

तुझ नयन के चमन मनें क्यों आ सकूँ कि याँ
खारा॑^१ के भाड़ो-भखड़े मिसगा॑^२ की बाड़ है



हुस्न का मसनद-नशीं वो दिलबरे-मुमताज़ है
दिलबरा॑ का हुस्न जिस मसनद का पा-अन्दाज़^३ है
गैरे-हैरत है खबर उस आइना-ए-रू की किसे
राज के पद्म में जिसकी खामुशी आवाज़ है
उस नज़ाकत आफ़रीं पर नाज़ है क्या नाज़ का
सर सूँले ता-पग तलक सब नाज़ ही सब नाज़ है
दिल मनें आकर हुआ खिल्वतनशीं तेरा ख्याल
ग़म तिरा सीने में मेरे राज़ का हमराज़ है
वो अपस के वक्त का मंसूर है आलम मनें
सिद्क सूँ तुझ बाट में जो आशिके-सरबाज़^४ है
सूख कर तुझ ग़म मनें यह तन हुआ है ज्यूँ रबाब^५
दम मिरा सीने में मेरे ज्यूँ कि तारे-साज़ है
याद सूँ उस रश्के-गुलज़ारे-अरम की ऐ 'वली'
रंग कूँ मेरे सदा ज्यूँ बूए-गुल-परवाज़^६ है

१. खारे आँसू २. पलक ३. पाँओ सुशोभित ४. सिर-धड़ की बाज़ी
लगाने वाला ५. ताँत ६. उड़ने वाली फूलों की खुशबूँ।

तेरे खयाल में जु हुआ खुशक ज्यूं रबाव^१
 मिज़राबे - ग़म^२ का हाथ उस ऊपर दराज़ है
 बाँगे - बुलन्द^३ बात यह कहता हूँ ऐ 'बली'
 इस शेर पर बजा है अगर मुझ कूँ नाज़ है



गौसमे-खत में न कर फ़िक्र ऐ गुले-रंगीं-ग्रदा
 सबज़-ए-गुलज़ारे-खूबी का अभी आगाज़^४ है



ज़िन्दा करना अस्तख्वाँ^५ कूँ गच्चे था कारे-सेज़
 ज़िन्दा करना शौक कूँ तुझ नाज़ का ऐजाज़^६ है



शौक के मरकब^७ कूँ राहे - इश्क में
 ऐ सजन तेरी निगाह महमेज़^८ है



दिल मिरा ऐ दिलबरे - शीरीं - बचन
 तुझ लबाँ के शौक सूँ लबरेज़ है
 चाहता हूँ दिल सती ऐ नाज़नीं
 जंग तेरी वो कि सुलह - आमेज़^९ है

१. ताँत, तार २. ग़मी की मिज़राब ३. ऊँची आवज़ में, अज्ञान देने वाले के समान ४. आरम्भ ५. हड्डी ६. अधिक आजजी, लाचारी ७. तरकीब छिपा हुआ, केन्द्र-बिन्दु ८. जूते या पाँव का निशान, पथ-प्रदर्शक ९. सुलहपूर्ण।

तहसीले-दिल के होने ये मुख किताब बस है
 दाताए-मुन्तखब^१ कूँ ये इन्तखाब^२ बस है
 मुझ हाल का करे गर आकर सवाल दिलबर
 तो लाजवाब होना मुझ कूँ जवाब बस है
 ताबे-कमर सूँ तेरी बेताब बस कि हूँ मैं
 मानिन्द जुलफे-खूबाँ^३ मुझ पेचो-ताब बस है
 जो इश्क के नगर का है सूबेदार जग में
 मजनूने-लैला-ए हुस्न उसका खिताब बस है
 जु कुई 'वली' की मानिन्द पीता है इश्क की मैं
 उस विरह के जले कूँ दिल का कबाब बस है



असबाबे-जंग रखना दरकार नहीं हमन कूँ
 दुश्मन के मारने कूँ इक तीरे-आह बस है
 दिल ले गया हमारा जादू सूँ वो परी-रू
 दीवानगी हमारी उस पर गवाह बस है
 ग़म नहीं अगर रक्कीबाँ आए हैं चढ़ 'वली' पर
 ऐ दोस्त, तुझ करम की मुझ कूँ पनाह बस है

१. छाँटने वाला २. चुनाव, छाँटा हुआ ३. सुन्दर प्रिय की अलके।

गर तमन्ना है कि हो रोशन दिलाँ में सरबुलन्द
मुझ सूँ परवाने ऊपर हो मोम दिल ऐ शमारु



आशिक कूँ तुझ दरस का दायम ख्याल बस है
खामोश होके रहना ऐ शाहे-काल^१ बस है
गर खल्क ईद खातिर मंगती है माहे-नौ^२ कूँ
मुझ दिल की ईद होने अबरु-हिलाल बस है
गर कामरू^३ में लोगाँ आलम कूँ मोहते हैं
हर दिलरुबा कूँ हर्गिज देता नहीं हूँ दिल मैं
दिल बस्तगी कूँ मेरी वो बेमशाल बस है
हरचन्द ऐ 'वली' हूँ गँक-बहरे-असियाँ^४
मुझ कूँ शफी-मुहशर^५-हज़रत की आल^६ बस है



देख कर उसकी अदा - ओ - नाज़ कूँ
हर परी कूँ ख्वाहिशे पा - बोस^७ है

१. शाही गुफ़तगू २. नया चाँद, दूज का या ईद का चाँद ३. काम-
रूप, असम प्रदेश का एक भाग, जहाँ का जादू प्रसिद्ध है ४. पापसागर ५.
परिणाम का सहारा ६. नज़दीकी कुनबा ७. पौत्र का चुम्बन ।

गर्मी सूँ तिरी तबीह^१ की डरते हैं सियाबख्लत
गुस्से सूँ कड़कना तिरा बिजली की कड़क है
करने कूँ 'वली' आशिके - बेताब कूँ ज़खमी
वो ज़ालिम, बेरहम निपट है निधड़क है



सर्व मेरा जब सती गुलपोश^२ है
हर तरफ सूँ बुलबुलाँ का जोश है
ऐ सजन यक बात है, लेकिन इसे
बूझता है वो कि जिस कूँ होश है
गोल पगड़ी के न फिर हर्गिज़ तू गिर्द
गोल पगड़ी हुस्न का सरपोश है
देखना तुझ क़द का ऐ नाज़ुक बदन
बायसे - ख़मियाज़ा - ए - आगोश^३ है
अब ख़लासी इश्क सूँ मुमकिन नहीं
दामे-दिल जुल्फो-दुवामी पोश^४ है
क्यों न हो उम्मीद का रोशन चिराग
शमा-ए-मजलिस साक्रिए-मै-नोश^५ है
हर सुख्न तेरा लताफ़त सूँ 'वली'
मशले-गौहर ज़ीनते-हर गौश^६ है

१. अंजाम २. फूलों से पूर्ण, सजा हुआ ३. अपनी कमी प्रगट करने
वाला ४. दिल जुल्फों के फन्दे में है ५. शराबी ६. मोती-सी चमक चारों
ओर फैली है।

दिल तलबगारे^१ - नाज़ महवश^२ है
 लुत्फ़ उसका अगच्चे दिलकश है
 मुझ सूँ क्योंकर मिलेगा हैराँ है
 शोख़ है, बेवफ़ा है, सरकश है
 क्या तिरी जुल्फ़, क्या तिरे अबरू
 हर तरफ सूँ मुझे कशाकश है
 तुम बिन ऐ दाग़ बख्श सीना-ओ-दिल
 चमने-लाला दशते - आतिश^३ है
 ऐ 'बली' तजुर्वे सूँ पाया है
 शोला-ए-आह शौके - वेग़श है



आ ऐ माहे-दोहफ़ता मिरे पास एक रोज़
 हर आन तुझ फ़िराक़ की सीना पे साल है



मस्त जामे-इश्क़ कूँ कुछ ग़म नहीं
 खातिरे-नासह अगर नासाफ़ है

१. इच्छु २. चाँद-सा ३. जंगल की आग।

हुस्न तेरा सूरज पे फ़ाज़िल^१ है
 मुख तिरा रश्के-माह-एकामिल^२ है
 हुस्न के दरस में लिया जो सबक़
 मुझ नज़क फ़ाज़िलो - मुकम्मल^३ है
 रात-दिन तुझ जमाले-रोशन^४ सूँ
 फ़ज़ले-परवरदिगार^५ शामिल है
 जिसकूँ तुझ हुस्न की नहीं है ख़बर
 बे-गुमाँ दो जहाँ में ग़ाफ़िल है
 जाद^६ राहे-दिल सूँ जो बग़ल में लिया
 इश्क के पथ में वो आक़िल^७ है
 इश्क की राह के मुसाफिर कूँ
 हर कदम तुझ गली में मंज़िल है
 ऐ 'वली' तज़े-इश्क^८ आसाँ नहीं
 आज़माया हूँ मैं कि मुश्किल है



तुझ फैज़ सूँ अँखियाँ कूँ मेरी नित है तरी
 तुझ याद सूँ हर अश्क मिरा रश्के-परी
 अज़बस कि तेरा जमाल सीने में रखा
 पाया है मेरे ख़याल ने दीया - वरी

१. अधिक, हावा २. चाँद की ईर्षा योग्य ३. उच्चतापूर्ण ४. प्रगट
 प्रकाश ५. ईश्वरीय कृपा, प्रकाश ६. सामान, खाना, तोशा ७. अक्लमन्द
 है ८. इश्क का पथ।

नशा बख्श आशिकाँ वो साकि- ए - गुलफ़ाम^१ है
जिसकी अँखियाँ का तसव्वुर^२ बेखुदी का जाम है
खोलना जुलफ़ा� का कुछ दरकार नहीं ऐ खुश नयन
यक निगाहे-नाज़ तेरी दो जहाँ का दाम है
आफताब आता है महरूम होके तुझ कूचे तरफ
सुबह सादक उसके बर में जामा - ए - अहराम^३ है
दिल कूँ जमीयत^४ है जब जाता हूँ दम्बाले-सनम^५
आरसी के साथ में सीमाब कूँ आराम है
मत कदम रख उस तरफ ऐ जाहिदे-खिलवत नशीं^६
ग़मज़हे - खूँखार^७ ज़ालिम दुश्मने इस्लाम है
जिस सनम की सरकशी का जग में है सेयत^८ बुलन्द
शुक्रे-हक्क वो काफ़िरे - बदकैश मेरा राम है
ऐ 'वली' क्यों खुशक-मग़ज़ी का नहीं करता इलाज
याद उन अँखियाँ की तुझ कूँ रोगने-वादाम है



तुझ गाल पर नह का निशान दिस्ता मुझे उस घात का
रोशन शफ़क^९ पर जगमगे ज्यों चाँद पिछली रात का

१. फूल जैसे रंग वाला २. ध्यान ३. हज का लिवास ४. जमात
५. साजन के पीछे ६. एकान्तप्रिय धार्मिक ७. खूँखार संकेत ८. प्रसिद्धि,
- ऊँचाई ९. आकाश।

उस सनम ने जब निकाला मुख सती अपना नकाब
सुबह - सादक का गेरबाँ फाड़ ज्यों सूरज दिसा



उस सर्वे - खुशग्रदा कुँ हमारा सलाम है
उस यार बेवफा कुँ हमारा सलाम है
लेता नहीं सलाम हमारा हिजाब सूँ
उस साहबे-हया कुँ हमारा सलाम है
उस बाज दिल में मेरे दूजा नहीं है मुद्दा
उस दिल के मुद्दाएँ कुँ हमारा सलाम है
नाज़ो-ग्रदा सूँ दिल कुँ मेरे मुब्तला किया
उस नाज़नीं पिया कुँ हमारा सलाम है
आरामे-जानो-दिल है 'वली' जिसका देखना
उस जाने-दिलरुबा कुँ हमारा सलाम है



आरफँ^१ पर हमेशा रोशन है
कि फने-आशिकी^२ अजब फन है
दुश्मन दीं^३ का दीने-दुश्मन है
राहज़न^४ का चिराग रोशन है

१. फनकार, कलाकार २. आशिकी की कला ३. धर्म का शत्रु

निगूँ कर आशनाई गैर सूँ ऐ सीमतन^१ हर्गिज़
न हो ऐ शमारु हर अंजुमन^२ में शोलाज़न^३ हर्गिज़



उस शाहे-नौखताँ^४ कूँ हमारा सलाम है
जिसके नगीने-लब^५ का दो आलम में नाम है
सरशारे - अनविसात^६ है उस अंजुमन मने
जिस कूँ ख़्याल तेरी अँखाँ का मदाम है
जिस सरज़मीं में तेरी भँवाँ का बया करूँ
खूबी हलाले-चर्ख^७ की वहाँ नातमाम है
जब लग है तुझ गली में रक्कीबे सियाह-रूँ
तव लग हमारे ह़क में हरेक सुबह-शाम है
तन्हा न बन्द इश्क में तेरी हुम्रा 'वली'
ये जुल्फ हल्कादार दो आलम का दाम^८ है



करेगी संगदिल के दिल में जा नक्श^९
सदाए - बेदिलाँ फरहादे - फन है
बजा है उस कूँ कहना खुसरए-वक्त^{१०}
नज़र में जिसकी वो शीरीं - बचन है

१. चाँदी से चमकते
२. सभा, दुनिया
३. प्रकाश करने वाले
४. नौजवानों के शाह
५. ओंठ के नगीने
६. शक्ति से बाहिर
७. आकाश पर चमकते दूज के चाँद
८. काले मन वाला रक्कीब
९. फन्दा
१०. चित्र
११. समय का खुसरो, शाह, मालिक।

तिरा मजनूँ हैं सहरा^१ की क़सम है
 तलब में हैं तमन्ना की क़सम है
 सरापा^२ नाज़ है तू ऐ परी-रु
 मुझे तेरे पराया की क़सम है
 दिया हक्क हुस्ने - बालादस्त^३ तुझ कूँ
 मुझे तुझ सर्वे - बाला^४ की क़सम है
 किया मुझ जुल्फ़ ने जग कूँ दिवाना
 तिरी जुल्फ़ों के सौदा^५ की क़सम है
 दुरंगी तर्क कर हर इक से मत मिल
 तुझे तुझ कदे - रुग्रना की क़सम है
 किया तुझ इश्क़ ने आलक कूँ मजनूँ
 मुझे तुझ रश्के-लैला की क़सम है
 'बली' मुश्ताक है तेरी निगह का
 मुझे तुझ चश्मे - शैहला^६ की क़सम है



कूँचा - ए - यार ऐन कासी है
 जोगिए - दिल वहाँ का वासी है
 पी के बैराग की उदासी सूँ
 दिल पे मेरे सदा उदासी है

१. रेगिस्तान २. सिर से पाँव तक ३. ऊँचा हुस्न, अत्यधिक सौन्दर्य
 ४. ऊँचे सर्वे के पेड़ ५. दीवाना ६. चगकती नीली आँख।

सनम मेरा निपट रोशन वयाँ है
 बरंगे-शोला-ए सर ता-पा-ज़वाँ^१ है
 नज़र करने में दिल उसका लिया है
 कमन्दे-गुल^२ निगाहे-बुलबुला है
 बजा है गर वो सर्वे - गुलशने - ता
 हमारी रास्ती^३ पर मेहरवाँ है
 वफ़ा कर हुस्न पर मगरूर मत हो
 वफ़ादारी बहारे - बेखिजाँ^४ है
 सनम मुझ दीदा-ओ-दिल^५ में गुज़र कर
 हवा है, बाग है, आबे-रवाँ^६ है
 हुआ तीरे मुलामत का निशाना
 नज़र में जिसकी वो अबरू - कमाँ है
 'वली' उसकी जफ़ा^७ सूँखौफ मत कर
 जफ़ा करना वफ़ा का इम्तहाँ है



तिरी ये जुल्फ़ है शामे-गरेवाँ^८
 जबीं^९ तेरी मुझे सुबहो-वतन है
 'वली' ईराँ ओ तूराँ में है मशहूर
 अगच्चे शायरे-मुल्के-दकन है

१. सम्पूर्ण शरीर २. टेढ़ी फूल-सी भाँवें ३. प्रेम ४. पतझड़रहित
 वसन्त, सदा बहार ५. आँख और मन में ६. बहता पानी, आँसू ७. बेव-
 फ़ाई, अत्याचार ८. शाम का आँचल ९. पेशानी, मस्तक ।

तिरे लब पर जू नत्ते - अम्बरीं^१ है
खते - याकूत् सूं^२ नक्शे - नगीं^३ है
चमन - आराए - बागे - खुश - अदाई
निहाले - क़द सर्वे - गुल जबीं है
कहो ज़ाहिद कूं जावे उस गली में
अगर मुश्ताक़ फिरदौसे - बरीं^४ है
न आवेगी कधी लिखने में हर्गिज़
मुसव्वर यो अदाए - नाज़नीं है
हमेशा देखती है तुझ कमर कूं^५
निगह मेरी सदा बारीक-बीं^६ है
मिरे हक्क में अनायत नामा - ए - यार^७
मशाले - शह पर - रुह - अल - अमीं^८ है
करे इक आन में जग कूं दीवाना
निगह तेरी कि जादू आफरीं है
नहीं गुलबर्ग गुलशन में ऐ लालन
तिरे गुलगूं का यो दामाने - ज़ीं^९ है
सवेदा^{१०} की नमत जावे न हर्गिज़
ख़याल उस ख़ाल का जो दिलनशीं है
'वली' जिन ने सुना मेरे सुखन कूं
ज़बाँ पर उसकी ज़िकरे - आफरीं है

१. लाल बिछौना २. लाल नक्श ३. नगीने जैसा लाल ४. स्वर्ग की
सुन्दरता ५. सूक्ष्मदर्शी ६. यार का पत्र ७. मज़बूत परों के समान पनाह
देने वाले ८. दामन की शोभा ९. दिल के काले निशान-सा ।

निकल ऐ दिलरुबा घर सूँ कि वक्ते-बेहिजाबी^१ है
 चमन में चल बहारे - निस्तरन है माहेताबी^२ है
 किसी की बात सुनता नहिं किसी पर रहम करता नहिं
 हटीला है, सितमगर है, जफाजू है, शराबी है
 गया है जब सूँ वो गुलरू चमन में मैकशी करने^३
 हर इक गुल सूरते-सागर हर इक गुँचा गुलाबी है
 गली में उस सितमगर न जा ऐ दिल, न जा ऐ दिल
 कि जाँबाजी में आफत है, क़्यामत है, ख़राबी है
 किसे ताकत है अँखियाँ खोलकर देखे तिरी जानिब
 भलक तुझ हुस्ने-रोशन की शुआए-आफताबी^४ है
 वफादारी बहारे - गुलशने - खूबी है ऐ गुलरू
 न बूझो सरसरी हर्गिज़ सुखन मेरा किताबी है
 बहारे आशिकी कूँ ताज़ा करना ऐ गुले-रुग्ना
 तिलत्तफ़^५ है मदारा^६ है, करम है, बेअताबी^७ है
 'वली' पाया रुबाई चार अबरु के तसव्वर में
 तखल्लुस चश्मे-गिरियाँ^८ का वजा है गरसुहाबी^९ है



क़सम तेरे तग़ाफुल की कि नर्गिस की क़लम लेकर
 तिरी अँखियों की आहू कूँ लिया हूँ खूने-जादू सूँ

१. बेपर्दगी का समय २. चाँदनी ३. शराब पीने ४. सूर्य की
 किरणें ५. मेहरबानी, लुल्फ ६. खातिर ७. मेहरबानी ८. रोती आँख
 ९. बरसने वाला बादल।

इश्क बेताब जाँ गुदाजी^१ है
हुस्ने-मुश्ताक दिलनवाजी है
अश्के-खूनीं सूँ जू किया है वजू^२
मज़हबे - इश्क में नमाजी है
जो हुआ राजे-इश्क सूँ आगाह
वो जमाने का फ़खरे-राजी है
पाक बाजाँ सूँ यूँ हुआ मफ़हूम^३
इश्क मज़मूने - पाकबाजी^४ है
जा के पहुँची है हद जुल्मत कूँ
बस कि तुझ जुल्फ में दराजी है
तजुबे सूँ हुआ मुझे ज़ाहिर
नाजे-मफ़हूम^५ बेनियाजी^६ है
ऐ 'वली' ऐशे-ज़ाहरी का सबब
जल्वा-ए-शाहदे - मजाजी है



और मुझ पास क्या है देने कूँ
देखकर तुझको रोए देता हूँ



उसके नहाने की सुख खबर आया
चश्मा-ए-आफ़ताब गर्म निकल

१. जानलेवा २. नमाज पढ़ने से पहले हाथ मुँह-धोना ३. समझा
हुआ, मालूम हुआ ४. पवित्रता का विषय ५. नाज की मालूमियत
६. बेरुखी।

अगर्चे तन्नाज़' यार जानी है
माहे-ऐश^१ जादुआनी है
याद करती है खत कूँ जुल्फे-सनम
काम हिन्दु का बेदख्वानी^२ है
तुझ सूँ हर्गिज़ जुदा नहीं ऐ जाँ
जब तलक मुझ में ज़िन्दगानी है
आशना नौनिहाल सूँ होना
समर-ए-गुलशने-जवानी है
दिल में आया है जब सूँ सर्वे-रवाँ
तब सूँ मुझ शेर में रवानी है
ऐ सिकन्दर, न ढूँढ आवे-हयात
चश्म-ए-खिज्ज खुशपयानी है
वक़्त मरने के बोलता है पतझं
कि मुहब्बत रफीके-जानी^३ है
गर्चे पाबन्दे-लफ़ज़ हूँ, लेकिन
दिल मिरा आशिके-मुहानी है
ऐ 'वली' फ़िक्रे-साफ़ साहिबे-दिल
गौहरे - बहर नुक़तादानी है

१. तना हुआ, अकड़ में
२. चाँदनी रात का आनन्द
३. वेदों का अध्ययन
४. जीवन के साथ, जीवनसाथी।

सदा हम कूँ खयाले रंगे-रुहे-यारजानी^१ है
 हमारे शीशा-ए-दिल में शराबे-अरग़वानी^२ है
 ज़बाने-हाल सूँ कहता है खुसरे-सब्जा-ए-नौखत
 बयाँ करना सनम के लब का आबे-ज़िन्दगानी^३ है
 गया है हुस्न की शादी में अज़बस बेतकल्लुफ़ हो
 सरापा इश्क के बर में लिवासे-ज़ाफ़रानी^४ है
 तवाज़ा^५ की तवक्को नौनिहालाँ सूँ न रख ए दिल
 कि बेबाकी ओ शोखी लाज़िमे-वक्ते-जवानी है
 हुआ है शौक जुल्फे भू-कमर सूँ खुश सुखन मेरा
 'वली' वो शेर नाज़ुक मौज दरिया-ए-मुहानी है



जिन ने तेरे हुस्न के दरिया कूँ देखा आँख भर
 वो हुआ खाली अपस सूँ जग में मानिन्दे-हुबाब^६



यक सुखन तेरे लब सूँ ऐ मसीह-रुहे-अफ़ज़ा^७
 हङ्क में जाँनिसारों के आबे - ज़िन्दगानी है
 सादा रुह जहाँ के सब गोश रख के सुनते हैं
 ऐ 'वली' सुखन तेरा गौहरे - मुहानी है

१. जान से प्यारा २. शराब की लाली ३. जीवन-अमृत ४. सिन्दूर
 पोशाक ५. आज़ज़ी ६. बुलबुला ७. दिल बढ़ाने वाला।

तुझ कूँ खूबाँ में बादशाही है
 सर ऊपर साया-ए-इलाही है
 बायसे दिलरुबाई-ए-आशिक़^१
 खुश निगाहों में खुश-निगाही है
 कम निकलने में उस परी-रु^२ के
 इश्कबाज़ाँ की खैरखाही^३ है
 जग में तेरी भवाँ की शोहरत सूँ
 कश्त - ए - अश्क़ाँ तबाही है
 क़त्ले-उश्शाक़ परबन्ध्या है कमर
 ग़मज़हे - तेग़ज़न सिपाही^४ है
 शाहे-खूबाँ के रुख पे सब्जा-ए-ख़त
 हुस्न की फौज की सिपाही है
 क्यों नहों इश्कबाज़ खुसरु-ए-वक़त
 इश्क का दाग़ चित्रशाही है
 नौखताँ की तरफ न जा ज़ाहिद
 ज़ेहदो-तक्वाँ की वहाँ मनाही है
 इश्कबाज़ाँ में है 'वली' सावित
 तालिबे-गुलरुखाँ कमाही है

१. प्रेम की दिलजोई का कारण २. सुन्दरी ३. भला चाहना
 ४. तेग़धारी सिपाही ५. धार्मिक विचारवाले।

मैं न जाना था कि तू नादान है
दिल दिया था तुझकूँ दाना बूझ कर



शुक्र वो जान गई, फिर आई
ऐश की आन गई, फिर आई
तेरे आने सती ऐ राहते - जाँ^१
शहर की जान गई फिर आई
फिर के आना तिरा है बायसे-शौक^२
जिस तरह तान गई, फिर आई
तिरे आने सती ऐ माहे - हुस्न^३
इश्क की शान गई फिर आई
ऐ 'बली' कन्द-मकार है यह बात
शुक्र वो जान गई फिर आई



निरा मुख है चिरागे-दिलखबाई
अर्याँ है उसमें नूरे - आशनाई
लिखा है तुझ कद उपर क्रातिबे - सनह
सरापा मअर्नी - ए - नाजुक अदाई
तु है सर-पाओं लग अज़बस कि नाजुक
निगाह करती है तुझ पग कूँ हिनाई^४

१. जान को चैन देने वाले २. शौक का कारण ३. सुन्दर चाँद ४.
मेहन्दी के रंग की।

सजन में है शुआरे - आशनाई^१
 न हो क्यों दिल शिकारे - आशनाई
 सनम तेरी मुरव्वत^२ पर नज़र कर
 हुआ है बेकरारे - आशनाई^३
 निपट दुश्वार था मुझ दिल में ऐ जाँ
 ज़माने - इन्तज़ारे - आशनाई
 हुआ मालूम तुझ मिलने सूँ लालन
 कि रंगीं हैं वहारे आशनाई
 हया के आब सूँ बागे - वफ़ा में
 रवाँ हैं जो वहारे - आशनाई
 वफ़ा दुश्मन न हो ऐ आशना रु
 वफ़ा पर है मदारे - आशनाई^४
 मुरव्वत के हमेशा हाथ में है
 अनाने - अख्लयारे - आशनाई^५
 मदारा तर्क मत कर ऐ हया - दोस्त
 मदारा है हिसारे - आशनाई
 'वली' इस वास्ते गिरयाँ^६ हैं हर आन
 कि तर हो सब्ज़ा - ज़ारे - आशनाई

१. प्रेम का शहूर, ढंग २. झिखक ३. प्रेम की बेचैनी ४. प्रेम का
 दारोमदार ५. प्रेम की आन, वश ६. रोता ।

तुझ मुख का रंग देख केवल जल में, जल गये
 तेरी निगाह काम सूँ गुलो - गुल पिघल गये
 हर इक कूँ काँ^१ है ताब जु देखे तिरी तरफ
 शेराँ तिरी निगाह की वहशत^२ सूँ टल गये
 साफ़ी^३ तिरे जमाल^४ की काँ लग बयाँ करूँ
 जिस पर कदम निगाह के अक्सर फ़िसल गये
 मरने से पहले जु कि मरे इस जगत मने
 तस्वीर की नमत वो खुदी सूँ निकल गये
 पाएँ जु कुई लज्जाते - दीं^५ जग में 'वली'
 दुनियाँ में हाय अपने वो हसरत सूँ मल गये



अन्दवहो-गम^६ की बात तिरे बाज बन गई
 आवाज़ मेरी आह की फिर ता-गगन गई
 ता-हश^७ उसका होश में आना मुहाल है
 जिसकी तरफ सनम की निगाहे - नयन गई
 सुरमें का मुँह सियाह किया^८ उनने जग मने
 जिस की नयन में पीव की खाके - चरन गई
 तन्हा सवाए - हिन्द^९ में शोहरत नहीं सनम
 तुझ जुल्फ मुश्कबू^{१०} की खबर ता-खतन^{११} गई
 अब लग 'वली' पिया ने दिखाया नहीं दरस
 ज्यूँ शमा इन्तज़ार में सारी रथन^{१२} गई

१. कहाँ २. भयानकता ३. सफाई ४. प्रकाश, सौन्दर्य ५. धर्म का
 आनन्द ६. गम के रंज ७. ता-क्यामत ८. काला किया, मात देना ९.
 भारतीय वायु-मण्डल १०. सुगन्धित केश ११. खतन तक १२. रात।

